

# दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

मार्च - अप्रैल 2023



**भारत सरकार के माननीय मंत्रियों द्वारा  
डेरी उद्योग सम्मेलन में प्रमुख भाषण**

सम्मेलन की संक्षिप्त रिपोर्ट और सचित्र झांकी



[www.indairyasso.org](http://www.indairyasso.org)

**49वां डेरी उद्योग सम्मेलन  
गांधीनगर, गुजरात**



SINCE 1975

## THE TRUSTED BRAND IN DAIRY INDUSTRY



**MILK COOLING TANK  
OPEN TYPE**

Available in 100 to 2500 Ltrs.



**MILK COOLING TANK  
CLOSED TYPE**

Available in 1000 to 15000 Ltrs.



**KK ALUMINIUM MILKCANS**

Available in 5 to 50 Ltrs.



**NOVALAC FARM FRES  
MILK PROCESSOR**

Capacity - 2000 Ltr. / day



**HEATING VAT MACHINE  
FOR PANEER & CURD**

Heating capacity - 200/300 Ltr./hr



**KK SS MILKCANS (AISI 304)**

Available in 5 to 50 Ltrs.



**RAPID CHILLING SYSTEM**



- **KK CANS & ALLIED PRODUCTS PVT. LTD.**
- **ASSOCIATED DAIRYFAB PVT. LTD.**

B-5, M.I.D.C., Ajanta Road, Jalgaon - 425003, Maharashtra, India.

Tel. : + 91-257-2211210, 2211700, Fax : +91-257-2210950. E-mail : kotharigroup@kkcans.net



www.malhar.org

*Spreading Healthy Smile - Globally*



## दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम  
इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका  
वर्ष : 7 अंक : 2 मार्च-अप्रैल, 2023

### सम्पादकीय मंडल

#### अध्यक्ष

डॉ. आर. एस. सोढी  
अध्यक्ष, इंडियन डेरी एसोसिएशन

#### सदस्य

डॉ. रामेश्वर सिंह कुलपति बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना	डॉ. बी.एस. बैनीवाल पूर्व प्राध्यापक लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार
डॉ. ओमवीर सिंह उप प्रबंध निदेशक मदर डेरी फ्रूट्स एंड वेजीटेबल्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली	डॉ. अर्चना वर्मा प्रधान वैज्ञानिक राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान करनाल
श्री सुधीर कुमार सिंह प्रबंध निदेशक झारखंड दुग्ध उत्पादक सहकारी महासंघ लिमिटेड, रांची	डॉ. अनूप कालरा कार्यकारी निदेशक आयुर्वेद लिमिटेड, गाजियाबाद
श्री किरीट मेहता प्रबंध निदेशक भारत डेरी, कोल्हापुर	

#### प्रकाशक

श्री ज्ञान प्रकाश वर्मा

संपादक विज्ञापन व व्यवसाय  
डॉ. जगदीप सक्सेना श्री नरेन्द्र कुमार पांडे

#### संपर्क

इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सैक्टर-IV,  
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022  
फोन : 011-26179781  
ईमेल : dsarita.ida@gmail.com

## विषय सूची



अध्यक्ष की बात, आपके साथ  
भारत में डेरी-अवसर  
और चुनौतियां  
डॉ. आर. एस. सोढी

6



मुख्य समाचार  
आईडीए द्वारा 49वें डेरी उद्योग  
सम्मेलन का आयोजन  
सुश्री प्रीति ग्रोवर, एकजीक्यूटिव, आईडीए

10



रिपोर्ट  
49वां डेरी उद्योग सम्मेलन  
प्रस्तुति: डॉ. जगदीप सक्सेना

12



रिपोर्ट  
भारत डेरी शिखर सम्मेलन  
प्रस्तुति: डॉ. जगदीप सक्सेना

15



सफलता की कहानी  
झारखंड की सुश्री निकिता बनी  
राष्ट्रीय डेरी पुरस्कार विजेता

24



नवाचार  
पशु सखियां: झारखंड का सामुदायिक  
पशु स्वास्थ्य सेवा मॉडल

28



अनुसंधान  
डेरी पशुओं पर गर्मी का दुष्प्रभाव  
एवं उसका प्रबंधन  
धर्मपाल, जितेंदर राणा, जसवंत कुमार रेगर,  
ज्योतिमाला साहू एवं अरुण कुमार मिश्रा

33



कहानी  
कदम्ब के फूल  
सुभद्रा कुमारी चौहान

37

## कविता, पशुपालन कैलेंडर और समाचार

#### डिस्कलेमर

लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों, जानकारीयों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं, उनसे आईडीए की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार आईडीए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुनः प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

#### मूल्य

एक प्रति : 75 रु.



# इंडियन डेरी एसोसिएशन

**इ**ंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) भारत के डेरी सेक्टर का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है। सन् 1948 में गठित इस संस्था ने देश को विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन के शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वर्तमान में इसके 3,000 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डेरी उद्यमी, डेरी किसान, पशुपालक और डेरी के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने वाले डेरी कर्मी शामिल हैं। आईडीए द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर ज्वलंत विषयों पर सम्मेलन, संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसकी सिफारिशों पर भारत सरकार द्वारा गंभीरता से विचार किया जाता है। आईडीए का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में कार्यरत हैं। साथ अनेक राज्यों में इसके चैप्टर भी सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों तक शोध परक व तकनीकी जानकारी और उपयोगी सूचनाओं के प्रसार के लिए आईडीए द्वारा पिछले लगभग सात दशकों से 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' और 'इंडियन डेरीमैन' का प्रकाशन किया जा रहा है। ये दोनों ही पत्रिकाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं। द्विमासिक हिन्दी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन आईडीए की नयी पहल है।

## आईडीए के पदाधिकारी

अध्यक्ष: डॉ. आर. एस. सोढ़ी

उपाध्यक्ष: श्री ए.के. खोसला और श्री अरुण पाटिल

### सदस्य

**चयनित:** श्री सी.पी. चार्ल्स, डॉ. गीता पटेल, श्री रामचंद्र चौधरी, श्री चेतन अरुण नारके, श्री राजेश गजानन लेले, श्री अनिल बर्मन, डॉ. बिमलेश मान, डॉ. बिकाश चंद्र घोष, श्री संजीव सिन्हा, श्री बी.वी.के. रेड्डी, एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड और श्री अमरदीप सिंह चड्ढा **नामित सदस्य:** डॉ. जी.एस. राजौरिया, श्री एस.एस.मान, श्री सुधीर कुमार सिंह, डॉ. सतीश कुलकर्णी, डॉ. जे.बी. प्रजापति, श्रीमती वर्षा जोशी, डॉ. धीर सिंह और श्री मीनेश शाह

**मुख्य कार्यालय:** इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए भवन, सेक्टर- IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली- 110022, टेलीफोन: 26170781, 26165237, 26165355, ई-मेल: idahq@rediffmail.com, www.indairyasso.org

## क्षेत्रीय, प्रांतीय एवं स्थानीय शाखाएं

**दक्षिणी क्षेत्र:** डॉ. सतीश कुलकर्णी, अध्यक्ष, आईडीए भवन, एनडीआरआई परिसर, अडुगोडी, बेंगलुरु-560 030, फोन न. 080-25710661, फैक्स-080-25710161.  
**पश्चिम क्षेत्र:** डॉ. जे.बी. प्रजापति, अध्यक्ष; ए-501, डाइनेस्टी बिजनेस पार्क, अंधेरी-कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई-400059 ई-मेल: chairman@idawz.org/secretary@idawz.org फोन न. 91 22 49784009 **उत्तरी क्षेत्र:** श्री एस.एस. मान, अध्यक्ष; आईडीए हाउस, सेक्टर IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली-110 022, फोन- 011-26170781, 26165355. **पूर्वी क्षेत्र:** श्री सुधीर कुमार सिंह, अध्यक्ष, C/O एनडीडीबी, ब्लॉक-डी, डी.के. सेक्टर-II, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता- 700 091, फोन- 033-23591884-7. **गुजरात राज्य चैप्टर:** श्री अमित मूलचंद व्यास, अध्यक्ष; C/O एसएमसी डेयरी विज्ञान कॉलेज, आणंद कृषि विश्वविद्यालय, आणंद- 388110, गुजरात, ई-मेल: idagscac@gmail.com **केरल राज्य चैप्टर:** डॉ. एस.एन. राजाकुमार, अध्यक्ष, C/O प्रोफेसर व अध्यक्ष, केवीएएसयू डेरी प्लांट, मन्नुथी, ई-मेल: idakeralachapter@gmail.com **राजस्थान राज्य चैप्टर:** श्री राहुल सक्सेना, अध्यक्ष, C/O केबिन न. 1, मनोरम 2 अम्बेशवर कॉलोनी, श्याम नगर मेट्रो स्टेशन के पास, जयपुर-302019 ई-मेल: idarajchapter@yahoo.com **पंजाब राज्य चैप्टर:** डॉ. बी.एम. महाजन, अध्यक्ष, C/O डेरी विकास विभाग, पंजाब लाइवस्टॉक कॉम्प्लेक्स, चौथी मंजिल, आर्मी इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ के निकट, सेक्टर-68, मोहाली, फोन: 0172-5027285 / 2217020, ई-मेल: ida.pb@rediffmail.com **बिहार राज्य चैप्टर:** श्री डी.के. श्रीवास्तव, अध्यक्ष, C/O पूर्व प्रबंध निदेशक, मिथिला मिल्क यूनियन, हाउस नं. 16, मंगलम एन्क्लेव, बेली रोड, सगुना एसबीआई के पास, पटना-814146 बिहार, ई-मेल: idabihar2019@gmail.com **हरियाणा राज्य चैप्टर:** डॉ. एस.के. कनौजिया, अध्यक्ष, C/O डेरी प्रौद्योगिकी प्रभाग, एनडीआरआई, करनाल-132001 (हरियाणा), फोन : 9896782850, ई-मेल: skkanawjia@rediffmail.com **तमिलनाडु राज्य चैप्टर:** श्री एस रामामूर्ति, अध्यक्ष; C/O डेरी साइंस विभाग, मद्रास पशु चिकित्सा कॉलेज, चैन्नई-600007 **आंध्र प्रदेश राज्य चैप्टर:** प्रो.रवि कुमार श्रीभाष्य, अध्यक्ष; C/O कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी, श्री वेंकटेश्वर पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, तिरुपति-517502 ई-मेल: idaap2020@gmail.com **पूर्वी यूपी स्थानीय चैप्टर:** प्रोफेसर डी.सी. राय, अध्यक्ष; प्रोफेसर, डेरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रमुख, पशुचिकित्सा एवं प्रौद्योगिकी, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005, फोन: 0542-2368009, ई-मेल: dcrai@bhu.ac.in **पश्चिमी यूपी स्थानीय चैप्टर:** श्री विजेन्द्र अग्रवाल, अध्यक्ष; C/O कैलाश डेरी लिमिटेड, रिठानी, दिल्ली रोड, मेरठ फोन: 9837019596 ई-मेल: vijendraagarwal2012@gmail.com **झारखण्ड स्थानीय चैप्टर:** श्री पवन कुमार मारवाह, अध्यक्ष; C/O झारखण्ड दुग्ध महासंघ, एफटीसी कॉम्प्लेक्स, धुर्वा सेक्टर-2, रांची, झारखण्ड-834004 ई-मेल: jharkhandida@gmail.com, डॉ. सतीश कुलकर्णी, **तेलंगाना लोकल चैप्टर:** श्री राजेश्वर राव चालीमेडा, अध्यक्ष; द्वारा डोडला डेरी लिमिटेड कार्पोरेट ऑफिस, # 8-2-293/82/A, 270/Q, रोड नंबर 10-C, जुबली हिल्स, हैदराबाद- 500 003, तेलंगाना



# इंडियन डेरी एसोसिएशन

## संस्थागत सदस्य

### बेनीफैक्टर सदस्य

अल्फा मिल्कफूड्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
एग्रीकल्चर स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया, गुरुग्राम (हरियाणा)  
अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर (राजस्थान)  
अपोलो एनीमल मेडिकल ग्रुप ट्रस्ट, जयपुर (राजस्थान)  
आयुर्वेद लिमिटेड (दिल्ली)  
बीएआईफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)  
बनासकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पालनपुर (गुजरात)  
बड़ौदा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)  
बेनी इमपेक्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
बेलगावी जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक समिति यूनियन लि., बेलगावी (कर्नाटक)  
भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ, भीलवाड़ा (राजस्थान)  
बिहार राज्य दुग्ध सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)  
ब्रिटानिया डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)  
सीपी मिल्क एंड फूड प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)  
डेयरी विकास विभाग टीवीएम, तिरुवनंतपुरम (केरल)  
डोडला डेरी लिमिटेड, हैदराबाद (तेलंगाना)  
डिजीवृद्धि टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
ईस्ट खासी हिल्स जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड (मेघालय)  
एवरैस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)  
फार्मगेट एग्री मिल्क प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
खाद्य और बायोटेक इंजीनियर्स (I) प्राइवेट लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)  
फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिस्तेमेटिक्स, आणंद (गुजरात)  
फ्रिक इंडिया लिमिटेड (हरियाणा)  
फ्रोमाजरीज बेल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
जी.आर.बी. डेरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, होसुर (तमिलनाडु)  
गाँधीनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, गाँधीनगर (गुजरात)  
जीईए प्रौसेस इंजीनियरिंग (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)  
गोविंद दुग्ध और दुग्ध उत्पाद लिमिटेड, सतारा (महाराष्ट्र)  
गोमा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे (महाराष्ट्र)  
गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड, आणंद (गुजरात)  
हसन दुग्ध संघ, हसन (कर्नाटक)  
हेरिटेज फूड्स लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)  
आईडीएमसी लिमिटेड, आणंद (गुजरात)  
आईटीसी फूड्स, बेंगलुरु (कर्नाटक)  
आईएफएम इलेक्ट्रॉनिक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)  
इंडियन इन्फ्यूजोल्जिकल्स लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)  
जे. एंड के. दुग्ध उत्पादक सहकारिता लिमिटेड, (जम्मू)  
जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)  
झारखंड राज्य दुग्ध संघ, रांची (झारखंड)  
कान्हा दुग्ध परीक्षण उपकरण प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
कौस्तुभ जैव-उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)  
करीमनगर जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)  
कर्नाटक सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, बेंगलुरु (कर्नाटक)

कीमिन इंडस्ट्रीज साउथ एशिया प्राइवेट लिमिटेड, चैन्नई (तमिलनाडु)  
केरल डेरी फार्मर्स वेलफेयर फंड बोर्ड (केरल)  
खम्बेते कोठारी कैन्स एवं सम्बद्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, जलगांव (महाराष्ट्र)  
कोल्हापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (महाराष्ट्र)  
कच्छ जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कच्छ (गुजरात)  
क्वालिटी लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)  
लेहुई इंडिया इंजिनियरिंग एंड इक्विपमेंट प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)  
मालाबार रीजनल कोऑपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स यूनियन लिमिटेड, कोझिकोड (केरल)  
मेसे म्यूनिकेन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (बिहार)  
मदर डेरी फ्रूट एंड वेजीटेबल प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
एनसीडीएफआई, आणंद (गुजरात)  
नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड, आणंद (गुजरात)  
भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, तंजावुर (निफ्टेम-टी), तमिलनाडु  
नियोजन फूड एंड एनीमल सिस्तेमेटिक्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, कोच्चि (केरल)  
नाऊ टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
पराग मिल्क फूड्स लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)  
पायस मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)  
पाली जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पाली (राजस्थान)  
पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड, हरिद्वार (उत्तराखंड)  
पोरबंदर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पोरबंदर (गुजरात)  
प्रॉम्ट इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड (गुजरात)  
रायचूर बेल्लारी एवं कोप्पल जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, बेल्लारी (कर्नाटक)  
राजस्थान सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)  
राजस्थान इलेक्ट्रोनिक्स एवं इंस्ट्रूमेंट्स लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)  
रेड काऊ डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, हुगली (पश्चिम बंगाल)  
रेफ्यूट इंजीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)  
रॉकवेल ऑटोमेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)  
आरपीएम इंजीनियरिंग (I) लिमिटेड, चैन्नई (तमिलनाडु)  
आर.के. गणपति चेट्टियार, तिरुपुर (तमिलनाडु)  
साबरकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, हिम्मतनगर (गुजरात)  
संजय गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेरी टेक्नोलॉजी, पटना (बिहार)  
सखी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, अलवर (राजस्थान)  
सीरेप इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)  
स्टर्लिंग एंग्लो इंडस्ट्रीज लिमिटेड (दिल्ली)  
एस.एस. इक्विपमेंट्स (दिल्ली)  
श्री गणेश एग्री वेट कार्पोरेशन, नवसारी (गुजरात)  
श्री राधे डेरी फार्म एंड फूड्स लिमिटेड, सूरत (गुजरात)  
सोलापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक व प्रक्रिया संघ मर्यादित (महाराष्ट्र)  
साइंटिफिक एंड डिजिटल सिस्टम्स (नई दिल्ली)  
श्रेबर डाइनामिक्स डेरीज लिमिटेड (महाराष्ट्र)  
श्री एडिटिव्स (फार्मा एंड फूड्स) प्राइवेट लिमिटेड, गांधी नगर (गुजरात)

## संस्थागत सदस्य

सूरत जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, सूरत (गुजरात)  
श्री विजयविशाखा दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)  
स्टीलैप्स टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु (कर्नाटक)  
एसएसपी प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)  
द कृष्णा जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश)  
द पंचमहल जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)  
उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, (गुजरात)  
उमंग डेयरीज लिमिटेड (दिल्ली)  
वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)  
वलसाड जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, नवसारी (गुजरात)  
विद्या डेरी, आनंद (गुजरात)  
विजय डेरी प्रोडक्ट्स, सूरत (गुजरात)

## वार्षिक सदस्य

एबीसी प्रोसेस सोल्यूशन्स प्राइवेट लि. (महाराष्ट्र)  
एबीटी इंडस्ट्रीज, कोयंबटूर (तमिलनाडु)  
एजीलेंट टेक्नोलॉजीस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
ऐरेन इंटरनेशनल लिमिटेड (मध्य प्रदेश)  
एक्वाटेक सिस्टम्स एशिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)  
एक्मॉस पावर लिमिटेड (गुजरात)  
औटोमिक इंडस्ट्रीज (महाराष्ट्र)  
अवलानी ब्रदर्स (गुजरात)  
एवाइवा इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड (गुजरात)  
बर्ग एंड शिम्प्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)  
क्लीयर पैक ऑटोमेशन प्राइवेट लिमिटेड (उत्तर प्रदेश)  
ईबीटी स्विस् इंजीनियरिंग ए जी (गुजरात)  
एपिक डेरी टेक्नोलॉजी (गुजरात)  
हेटसन ऐग्रो प्रोडक्ट्स लि. चेन्नई (तमिलनाडु)  
इंदापुर डेरी एंड मिल्क प्रोडक्ट्स लि. (महाराष्ट्र)  
इफको किसान सुविधा लि. (दिल्ली)  
जे एम फिल्डेशन टेक्नोलॉजी (महाराष्ट्र)  
जलगांव जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (गुजरात)  
जामनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (गुजरात)  
झोन वाल्व्स एक्सिस इंडिया (महाराष्ट्र)  
जूमो इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (गुजरात)  
कोठरी कोरोज़न कंट्रोलर्स (गुजरात)  
मेहसाना जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लि. (गुजरात)  
माही दुग्ध उत्पादक कंपनी लि. (गुजरात)  
मिल्की मिष्ट डेरी फूड प्रा. लि. (तमिलनाडु)  
मूफार्म प्राइवेट लिमिटेड (हरियाणा)  
एमपी राज्य सहकारी डेरी महासंघ लि. (मध्य प्रदेश)  
पोटेंस कंट्रोलस प्रा. लि. (महाराष्ट्र)  
पूर्णाश्री इक्विपमेंट्स (केरल)

आर एंड डी इंजीनियरिंग कनसलटेंसी (महाराष्ट्र)  
राजश्री पॉलीपैक लि. (महाराष्ट्र)  
सागर पॉलीफिल्म प्रा. लि. (गुजरात)  
श्री भावनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लि. (गुजरात)  
श्री मोरबी जिला महिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लि. (गुजरात)  
श्वेतधारा दुग्ध उत्पादक कंपनी लि. (उत्तर प्रदेश)  
सीमेन्स लिमिटेड (महाराष्ट्र)  
एसआईजी कौम्बीबलॉक इंडिया प्रा. लि. (हरियाणा)  
सोमवंशी एनवाइरो इंजीनियरिंग प्रा. लि. (उत्तर प्रदेश)  
सनफ्रेस एग्रो इंडस्ट्रीज प्रा. लि. (महाराष्ट्र)  
सुरेंद्रनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (गुजरात)  
टेक्नॉइस एस. आर. एल. (गुजरात)  
टेट्रापैक इंडिया (महाराष्ट्र)  
थर्मोफिशर साइंटिफिक इंडिया प्रा. लि. (महाराष्ट्र)  
विनी एंटरप्राइजेज (गुजरात)  
वैभव प्लास्टो प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग प्रा. लि. (महाराष्ट्र)  
वीजर इंडिया प्रा. लि. (गुजरात)  
यामिर पैकेजिंग प्रा. लि. (गुजरात)  
ज्यूटेक इंजिनियर्स प्रा. लि. (महाराष्ट्र)  
जाइडेक्स इंडस्ट्रीज प्रा. लि. (गुजरात)  
भरूच जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)  
बी.जी. चितले डेरी, सांगली (महाराष्ट्र)  
भोपाल सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (मध्य प्रदेश)  
कोरोनेशन वर्थ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
सीएचआर हेन्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
डीएसएस इमेजटेक प्राइवेट लिमिटेड, (दिल्ली)  
दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, (महाराष्ट्र)  
गोमती सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, अगरतला  
जॉन बीन टेक्नोलॉजीस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)  
के एंड डी कम्युनिकेशन लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)  
कैरा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लि., आनंद (गुजरात)  
कोएलनमेसे या ट्रेडफेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
मिशेल जेनज़िक एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
मॉडने डेरीज़ लिमिटेड, करनाल (हरियाणा)  
मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड, इटावा (उत्तर प्रदेश)  
पुडुकोट्टई जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (तमिलनाडु)  
क्यूबॉयड आयोटेक प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)  
राजकोट जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, राजकोट (गुजरात)  
आरजीएस वेट न्यूट्रास्यूटिकलस कॉय, इरोड (तमिलनाडु)  
सर्वल इंडिया ऐनीमल न्यूट्रीशन प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)  
संगम दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, गुंटूर (आंध्र प्रदेश)  
द मिदनापुर कोऑपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स यूनियन लिमिटेड, (पश्चिम बंगाल)  
वास्ता बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

# आज सिंधु में ज्वार उठा है

- अटल बिहारी वाजपेयी



आज सिंधु में ज्वार उठा है,  
नगपति फिर ललकार उठा है  
कुरुक्षेत्र के कण-कण से फिर  
पांचजन्य हूँकार उठा है।

शत-शत आघातों को सहकर  
जीवित हिंदुस्तान हमारा  
जग के मस्तक पर रोली-सा  
शोभित हिंदुस्तान हमारा।

दुनिया का इतिहास पूछता  
रोम कहाँ, यूनान कहाँ हैं  
घर-घर में शुभ अग्नि जलाता  
वह उन्नत ईरान कहाँ है?

दीप बुझे पश्चिमी गगन के  
व्याप्त हुआ बर्बर अधियारा  
किंतु चीर कर तम की छाती  
चमका हिंदुस्तान हमारा।

हमने उर का स्नेह लुटाकर  
पीड़ित ईरानी पाले हैं  
निज जीवन की ज्योति जला  
मानवता के दीपक बाले हैं।

जग को अमृत का घट देकर  
हमने विष का पान किया था  
मानवता के लिये हर्ष से  
अस्थि-वज्र का दान दिया था।

जब पश्चिम ने वन फल खाकर  
छाल पहनकर लाज बचाई  
तब भारत से साम गान का  
स्वार्गिक स्वर था दिया सुनाई।

अज्ञानी मानव को हमने  
दिव्य ज्ञान का दान दिया था  
अम्बर के ललाट को चूमा  
अतल सिंधु को छान लिया था।

साक्षी है इतिहास प्रकृति का  
तब से अनुपम अभिनय होता है  
पूरब से उगता है सूरज  
पश्चिम के तम में लय होता है।

विश्व गगन पर अगणित गौरव  
के दीपक अब भी जलते हैं  
कोटि-कोटि नयनों में स्वर्णिम  
युग के शत सपने पलते हैं।

किन्तु आज पुत्रों के शोणित से  
रंजित वसुधा की छाती  
टुकड़े-टुकड़े हुई विभाजित  
बलिदानी पुरखों की थाती।

कण-कण पर शोणित बिखरा है  
पग-पग पर माथे की रोली  
इधर मनी सुख की दीवाली  
और उधर जन-जन की होली।

मांगों का सिंदूर, चिता की  
भस्म बना, हा-हा खाता है,  
अगणित जीवन-दीप बुझाता,  
पापों का झोंका आता है।

तट से अपना सर टकराकर  
झेलम की लहरें पुकारती  
यूनानी का रक्त दिखाकर  
चन्द्रगुप्त को हैं गुहारती।

रो-रोकर पंजाब पूछता  
किसने है दोआब बनाया  
किसने मंदिर - गुरुद्वारों को  
अधर्म का अंगार दिखाया?

खड़े देहली पर हो  
किसने पौरुष को ललकारा  
किसने पापी हाथ बढ़ाकर  
माँ का मुकुट उतारा।

कश्मीर के नंदन वन को  
किसने है सुलगाया  
किसने छाती पर  
अन्यायों का अम्बार लगाया?

आँख खोलकर देखो घर में  
भीषण आग लगी है  
धर्म, सभ्यता, संस्कृति खाने  
दानव क्षुधा जगी है।

हिन्दू कहने में शर्माते  
दूध लजाते, लाज न आती  
घोर पतन है, अपनी माँ को  
माँ कहने में फटती छाती।

जिसने रक्त पीला कर पाला  
क्षण भर उसकी ओर निहारो  
सूनी सूनी माँग निहारो  
बिखरे-बिखरे केश निहारो।

जब तक दुःशासन है  
वेणी कैसे बंध पायेगी  
कोटि-कोटि संतति है  
माँ की लाज न लुट पायेगी।







### भारत में डेरी – अवसर और चुनौतियां

**स**बसे पहले मैं इंडियन डेरी एसोसिएशन के पश्चिम क्षेत्र और गुजरात राज्य चैप्टर की टीम को गुजरात के गांधीनगर में आईडीए के 49वें डेरी उद्योग सम्मेलन के सफल और सुंदर आयोजन पर बधाई देता हूँ। गुजरात में इसका आयोजन 27 वर्षों के अंतराल के बाद किया गया और इस अवधि में केवल गुजरात में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में डेरी सेक्टर में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। उस समय इस वार्षिक सम्मेलन का आयोजन देश की महान विभूति डॉ. वर्गीज़ कुरियन के नेतृत्व में किया गया था, और मुझे यह कहने में गर्व है कि इनकी गौरवशाली परंपरा को आज भी जारी रखा गया है। दस लाख करोड़ रुपये मूल्य के डेरी उद्योग से जुड़े डेरी किसान, डेरी वैज्ञानिक, व्यवसायी, नीति निर्माता आदि सभी यहां आईडीए के बैनर तले एकत्रित थे। गुजरात में 1986 में आयोजित पिछले आईडीए सम्मेलन के बाद से अब तक देश में दूध उत्पादन 71 मिलियन मीट्रिक टन (एमएमटी) से तिगुना बढ़कर 222 एमएमटी पर पहुंच गया है। गुजरात में दूध उत्पादन 30 लाख लीटर प्रतिदिन से लगभग नौ गुना बढ़कर 270 लाख लीटर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। भारत में डेरी ऐसे चंद उद्योगों में से एक है, जिसका विकास मुख्य रूप से बुनियादी संरचनाओं में विस्तार के कारण हुआ है।

डेरी उद्योग सम्मेलन में भागीदारी एक अत्यंत सकारात्मक, ज्ञानवर्धक और आनंददायक अनुभव रहा। मैं सम्मेलन के सभी प्रतिभागियों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ, क्योंकि उनकी सक्रिय और सार्थक भागीदारी और उत्साह के कारण ही यह आयोजन अत्यंत सफल रहा। इस अवसर पर मैं आयोजन समिति की भी हृदय से सराहना करता हूँ, जिन्होंने अपने पूर्ण समर्पण के भाव से सम्मेलन का कुशल और सफल संचालन किया। मैं उन सभी प्रतिष्ठित वक्ताओं के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने अनेक तकनीकी सत्रों में अपने अनुभवों और तकनीकी ज्ञान की साझेदारी करके प्रतिभागियों को

नवीनतम ज्ञान व नवाचार से समृद्ध किया। मैं सम्मेलन के सभी प्रायोजकों का भी आभारी हूँ, जिनकी सहायता के कारण यह भव्य आयोजन सफल हो पाया। आयोजन स्थल पर दिन-रात कार्य करने वाले कार्मिकों, तकनीशियनों और वालंटियर्स का भी आभारी हूँ, जिन्होंने पर्दे के पीछे रहकर मेहनत की और आयोजन को सफल बनाया।

इस वर्ष सम्मेलन का मुख्य विषय था भारत विश्व का डेरी स्रोत: अवसर और चुनौतियाँ। इसमें 3,000 से अधिक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय डेरी प्रमुखों, विशेषज्ञों, डेरी किसानों, डेरी उत्पादों के निर्माताओं और अन्य संबंधितों ने भागीदारी की तथा विभिन्न तकनीकी विषयों, जैसे डेरी विज्ञान व फार्मिंग तकनीकें और नवाचार, डेरी सेक्टर में स्टार्टअप का विकास, जलवायु परिवर्तन व डेरी में सततता आदि, पर आयोजित 19 तकनीकी सत्रों व पैनल चर्चाओं में अपने विचार व्यक्त किये। सम्मेलन के साथ आयोजित एक्सपो में लगभग 205 राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय कंपनियों ने अपने उत्पाद तथा सेवाएं प्रदर्शित की।



अमूल के अध्यक्ष श्री शमलभाई पटेल का सम्मान

सम्मेलन के भव्य उद्घाटन समारोह (16 मार्च, 2023) की अध्यक्षता भारत सरकार के माननीय पशुपालन, डेरी और मत्स्य मंत्री श्री परशोत्तम रूपाला ने की। इस अवसर 3,000 से अधिक प्रतिभागी और अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। श्री रूपाला ने अपने भाषण में ग्रामीण भारत में डेरी के महत्त्व को रेखांकित किया और बताया कि दूध का व्यवसाय प्राचीन काल से ही भारत की संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। विकसित देशों के विपरीत हमारे देश में छोटे और सीमांत किसान डेरी सेक्टर की धुरी हैं। डेरी सेक्टर लगभग नौ करोड़ परिवारों की आजीविका का स्रोत है और डेरी कार्यबल में लगभग 70 प्रतिशत महिला उत्पादक हैं। भारत के डेरी व्यवसाय का सफल मॉडल पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल है। उन्होंने भारतीय डेरी सेक्टर के एक प्रमुख पहलू, वसा-समृद्ध उत्पादों की कमी, पर टिप्पणी करते हुए कहा कि हमें गोवंशीय पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने के लिए गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि यह संकट दूर हो सके। साथ ही भारत के अगले 25 वर्षों के लक्ष्य पूरे करने के लिए भी तुरंत कदम उठाने होंगे।

भारत सरकार के माननीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने सम्मेलन के तीसरे दिन आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता की और अपने प्रेरणात्मक संबोधन में कहा कि भारत की विकास यात्रा में डेरी ने अहम योगदान दिया है। उन्होंने डेरी में भारत के सहकारी व्यावसायिक मॉडल की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह एक मात्र उदाहरण है, जहां उपभोक्ता द्वारा चुकायी गयी कीमत का 70 प्रतिशत डेरी किसान को मिलता है। श्री शाह ने कहा कि भारतीय डेरी उद्योग को तेजी से आगे बढ़ने के लिए व्यावसायिक कुशलता, नवीनतम प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर तकनीकों और डिजिटल प्रौद्योगिकी को बड़े पैमाने पर अपनाना चाहिए। उन्होंने बताया कि भारत सरकार के संबंधित विभागों द्वारा जल्दी ही देश भर में दो लाख पंचायतों में ग्रामीण डेरियां स्थापित की जाएंगी, जिससे डेरी सेक्टर की वृद्धि दर 13.80 प्रतिशत तक पहुंचने की संभावना है। अब भारत में श्वेत क्रांति 2.0 की आवश्यकता है, ताकि हम दूध उत्पादन और उत्पादकता में नई ऊंचाई तक पहुंच सकें।

इस अवसर पर गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्रभाई पटेल ने अपने भाषण में भारत में, विशेषकर गुजरात में, डेरी के अद्भुत विकास की चर्चा की और कहा कि भारतीय डेरी उद्योग की यह विशेषता है कि यहां बहुत सारे लोग थोड़ा-थोड़ा दूध उत्पादन करते हैं, जबकि इसके विपरीत विकसित देशों में थोड़े लोग बहुत सारा दूध उत्पादन करते हैं। देश के कुल दूध उत्पादकों में 70 प्रतिशत महिलाएं हैं, जो पशुपालन और डेरी में सक्रिय योगदान करती हैं। उन्होंने कहा कि भारत के अनोखे सहकारी व्यावसायिक मॉडल की दुनिया भर में सराहना की जाती है, और विश्व के विकासशील देश इस मॉडल को अपनाकर अपने देश में डेरी का कायाकल्प कर सकते हैं। देश में डेरी सेक्टर ने अपनी वितरण व आपूर्ति श्रृंखला में असाधारण कुशलता प्रदर्शित की है। अब हमारे यहां घी और मक्खन जैसे परंपरागत डेरी उत्पादों के व्यावसायिक

निर्माण के साथ नवाचारी उत्पादों जैसे आर्गेनिक उत्पाद, प्रोबायोटिक्स, स्नैक्स आदि का उत्पादन भी किया जा रहा है।



*गणमान्य अतिथियों की सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी*

व्यवसाय भी है, जिसमें डेरी किसानों के आर्थिक उद्धार की अपार संभावनाएं हैं। श्री शाह ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम वितरण व मार्केटिंग की क्षमता बढ़ाएं, ताकि दूध और डेरी उत्पादों के वैश्विक निर्यात में हमारी हिस्सेदारी मात्र एक प्रतिशत से बढ़कर 15 प्रतिशत तक हो जाए।

नीति आयोग के सदस्य प्रोफेसर रमेश चंद ने प्रतिष्ठित डॉ. वर्गीज कुरियन मेमोरियल लेक्चर प्रस्तुत किया और सम्मेलन के उद्घाटन समारोह को भी संबोधित किया। उन्होंने पिछले 50 वर्षों में डेरी किसानों और डेरियों के प्रधानों द्वारा डेरी सेक्टर में उनके प्रमुख योगदानों के लिए बधाई दी। साथ ही उन्होंने भारतीय सेक्टर के सामने मौजूद चुनौतियों और लक्ष्यों पर भी चर्चा की। दूध का अभाव झेलने वाले देश से लेकर विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक बनने तक की यात्रा स्वतंत्र भारत की एक विशिष्ट उपलब्धि है। अगले वर्ष तक भारत विश्व के कुल दूध उत्पादन में लगभग 25 प्रतिशत का योगदान देने में समर्थ होगा। प्रोफेसर रमेश चंद ने कहा कि भारत के डेरी उत्पादों को विश्व के निर्यात बाजार में अपनी जगह बनानी होगी। साथ ही हमें दूध और डेरी उत्पादों में मिलावट की चुनौती से भी निपटना है, जो असंगठित क्षेत्र में अधिक प्रचलित है।

अंतरराष्ट्रीय डेरी फेडरेशन (आईडीएफ) के अध्यक्ष मिस्टर पियरक्रिस्टियानो ब्राज़ेल ने अपने संबोधन में भारतीय डेरी सेक्टर की सराहना करते हुए कहा कि मैं भारतीय डेरी मूल्य श्रृंखला में आधुनिकता और प्रौद्योगिकी के समावेश से विशेष रूप से प्रभावित हूं। भारतीय डेरी के कामकाज के विभिन्न आयामों में यह स्पष्ट रूप में दिखता है, और भविष्य में इसका विकास निश्चित रूप से इसे वैश्विक पटल पर स्थापित कर देगा।



आईडीएफ की महानिदेशक सुश्री कैरोलीन एमंड ने 49वें डेरी उद्योग सम्मेलन को एक ऐसा वैश्विक मंच बताया जहां राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय डेरी सेक्टर के प्रतिनिधि मिलकर चर्चा कर सकेंगे और अपने ज्ञान, अनुभवों व नवाचारों को साझा कर सकेंगे। यहां उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यावसायिक अवसरों और परस्पर संबंध बनाने के मौके भी मिलेंगे। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन भारतीय डेरी सेक्टर की सफलता की कहानियों को नजदीक से जानने-समझने का अवसर भी है। इनसे हम काफी कुछ सीख सकते हैं।



विज्ञान, अनुसंधान और नवाचार

गांधीनगर में आयोजित सम्मेलन एक ऐसा अवसर था, जहां हम भारतीय डेरी सेक्टर की अनेक विशिष्टताओं और सफलताओं को प्रदर्शित कर सके, जैसे छोटे दूध उत्पादकों, विशेषकर महिलाओं, की सामर्थ्य, और शक्ति, बहुत सारे लोगों द्वारा दूध के उत्पादन और खपत की वास्तविक तस्वीर, आपूर्ति श्रृंखला की कुशलता, अनेक नवीनतम प्रौद्योगिकी और तकनीकें, नये उत्पादों के निर्माण में नवाचार, दूध के संग्रह, प्रसंस्करण और मार्केटिंग में नवीनतम प्रौद्योगिकी और तकनीकों का उपयोग, आदि। सभी प्रतिभागियों और भागीदारों को इस सम्मेलन में अपने क्षेत्र के विशेषज्ञों से बहुत कुछ प्राप्त हुआ। भारत में दूध उत्पादन के रुझानों और अनुमानों के अनुसार अगले 25 वर्षों में देश में दूध का उत्पादन 628 मिलियन मीट्रिक टन के स्तर पर पहुंच जाएगा और विश्व के कुल दूध उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी लगभग 45 प्रतिशत होगी। अगले 25 वर्षों में देश के कुल दूध उत्पादन का मूल्य 400 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच जाएगा, जो वर्तमान में 110 मिलियन अमेरिकी डॉलर है। इसका अर्थ यह है कि उस समय भारत के पास 110 एमएमटी दूध अतिरिक्त रूप में मौजूद होगा। इसलिए हमें दूध और दूध उत्पादों का निर्यात बढ़ाने के लिए तुरंत निवेश प्रारंभ कर देना चाहिए। डेरी उद्योग का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है और यह एक सुनहरा अवसर है, जब भारतीय डेरी उद्योग विश्व के लिए प्रमुख डेरी स्रोत बन सकता है।



मैंने पिछले अनेक वर्षों में देश-दुनिया के अनेक भागों में आयोजित अनेक डेरी सम्मेलनों में भागीदारी की है। मेरा यह मानना है कि 49वें डेरी उद्योग सम्मेलन का आयोजन निश्चित रूप से सर्वश्रेष्ठ था और हमने आयोजन के स्तर को काफी ऊपर उठा दिया है। सम्मेलन के दौरान प्रतिभागियों को उत्कृष्ट स्तर की सुविधाएं प्रदान की गईं और तकनीकी सत्रों का अकादमिक स्तर भी श्रेष्ठ रहा। मुझे आशा है कि भविष्य में ऐसे अनेक आयोजन किये जाएंगे और डेरी समुदाय को एक मंच पर एकत्र होकर विचार-विमर्श का अवसर मिलेगा।

(डॉ. आर. एस. सोढ़ी)

## मुख्य समाचार



## आईडीए द्वारा 49 वें डेरी उद्योग सम्मेलन का आयोजन

सुश्री प्रीति गोवर, एकजीक्यूटिव, आईडीए

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) के 49वें डेरी उद्योग सम्मेलन (डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस) का 16 से 18 मार्च, 2023 तक गांधीनगर, गुजरात में आयोजन किया गया। सम्मेलन का मुख्य विषय 'भारत के लिए विश्व डेरी बनने का अवसर और चुनौतियाँ' था। सत्ताइस वर्षों के बाद गुजरात में संपन्न इस तीन दिवसीय सम्मेलन में भारत और विदेशों के डेरी विशेषज्ञों, सहकारी समितियों, दुग्ध उत्पादकों, सरकारी अधिकारियों, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, योजनाकारों, छात्रों और हितधारकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

यह सम्मेलन डेरी क्षेत्र के पेशेवरों के लिए एक साथ आने और दुनिया के डेरी परिदृश्य में सततता, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और पोषण में नवविचारों पर चर्चा के माध्यम से डेरी समाधानों पर विचार – विमर्श करने का एक मंच था।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय श्री अमित शाह ने 49वें डेरी उद्योग सम्मेलन के समापन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि भारत को दुनिया के सबसे बड़े डेरी निर्यातक बनने के लक्ष्य पर भी ध्यान देना चाहिए। हमारी दूध प्रसंस्करण क्षमता लगभग 126 मिलियन लीटर प्रतिदिन है, जो दुनिया में सबसे अधिक है। वर्ष 1970 से 2022 तक भारत की जनसंख्या में चार गुना वृद्धि हुई है, लेकिन दूध उत्पादन में दस गुना वृद्धि हुई है। पिछले एक दशक में भारतीय डेरी क्षेत्र में प्रतिवर्ष 6.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। केंद्र सरकार गांवों में



अनेक गणमान्य अतिथियों एवं केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन व डेरी मंत्री द्वारा दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन

दो लाख डेरी सहकारी समितियों की स्थापना कर रही है और ऐसा होने पर डेरी क्षेत्र की वृद्धि 13.80 प्रतिशत हो जाएगी। वैश्विक दुग्ध उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी 33 प्रतिशत होगी। हमारा डेरी निर्यात मौजूदा स्तर से कम से कम पांच गुना अधिक होगा। श्री शाह ने कहा कि डेरी उद्योग विश्व के लिए एक व्यवसाय है, लेकिन भारत में यह ग्रामीण लोगों के लिए आजीविका का एक बड़ा स्रोत है। यहां नौ करोड़ परिवार डेरी उद्योग से सीधे जुड़े हुए हैं।



मुख्य अतिथि व गणमान्य अतिथियों द्वारा स्मारिका का विमोचन

केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन एवं डेरी मंत्री श्री परपोत्तम रूपाला ने डेरी उद्योग सम्मेलन और एक्सपो के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि भारत को दुनिया की डेरी बनने के लिए पशुओं की नस्ल सुधार पर ध्यान देना समय की मांग है। हालांकि प्रति पशु औसत दूध उत्पादन ढाई से तीन लीटर है, फिर भी भारत दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक है। कल्पना कीजिए कि अगर उत्पादकता 10 लीटर तक बढ़ा दी जाए तो भारत डेरी उद्योग में कितना आगे जा सकता है? हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए डेरी पशुओं की नस्ल सुधार को मिशन मोड में लेना होगा।



**मुख्य अतिथि द्वारा संबोधन**

आईडीए के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. सोढ़ी ने अपने भाषण में कहा कि पिछला डेरी उद्योग सम्मेलन वर्ष 1996 में आनंद में आयोजित किया गया था। तब से डेरी क्षेत्र ने अद्वितीय विकास हासिल किया है। उस समय भारत में दूध का उत्पादन 71 मिलियन टन था, जो अब बढ़कर 222 टन हो गया है। भारत में दूध का उत्पादन लगभग तीन गुना बढ़ गया है, जबकि गुजरात में उत्पादन नौ गुना बढ़कर 30 लाख लीटर से 270 लाख लीटर प्रतिदिन हो गया है। डेरी क्षेत्र में एक आत्मनिर्भर और कुशल आपूर्ति शृंखला बनाकर और बुनियादी ढांचे में निवेश करके हम डेरी उद्योग के विकास में योगदान कर सकते हैं।



**आईडीए के अध्यक्ष डॉ. आर.एस. सोढ़ी द्वारा अतिथियों व प्रतिभागियों का स्वागत**

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र भाई पटेल ने भी इस अवसर को संबोधित करते हुए कहा, 'छोटे डेरी किसान भारतीय डेरी क्षेत्र की असली ताकत हैं। गुजरात समग्र विकास का एक मॉडल रहा है और देश के दूध उत्पादन में 20 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ डेरी उद्योग में भी अग्रणी है। डेरी किसानों को मूल्यवर्धन पर ध्यान देना चाहिए और सतत विकास के लिए दूध और दूध उत्पादों की गुणवत्ता पर ध्यान देना चाहिए।'

इस अवसर पर डॉ. कुरियन पुरस्कार, प्रो. श्रीनिवासन मेमोरियल ओरेशन पुरस्कार, आईडीए पैट्रन पुरस्कार, आईडीए फैलोशिप पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ डेरी महिला पुरस्कार सहित अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

उद्घाटन समारोह में डेरी उद्योग सम्मेलन की एक स्मारिका का भी विमोचन किया गया। इस अवसर पर डेरी क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले व्यक्तियों और संगठनों को सम्मानित किया गया। इंटरनेशनल डेरी फेडरेशन के अध्यक्ष मिस्टर पियरक्रिस्टियानो ब्राज़ेल ने विश्व में डेरी क्षेत्र की स्थिति पर अपने विचार व्यक्त किए।

नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद ने कहा कि देश की पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने में दूध और दूध उत्पाद अहम भूमिका निभाते हैं। भारत में दूध की मांग 6 प्रतिशत दर से बढ़ रही है, लेकिन जनसंख्या वृद्धि केवल 1 प्रतिशत है। उद्योग के विकास के लिए हमें विदेशी बाजार हासिल करने और दूध की गुणवत्ता में सुधार करने की आवश्यकता है।

समारोह को संबोधित करते हुए श्री मीनेश शाह, अध्यक्ष, राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ने कहा कि हमारे पास विज़न 2047 का खाका तैयार है। इसे प्राप्त करने के लिए हमें संसाधनों और स्रोतों के बीच अपने तालमेल का इस्तेमाल करना होगा। हमें दुधारू पशुओं की उत्पादकता को चौगुना करना है और भारत के दुग्ध उत्पादों के निर्यात को 15 प्रतिशत तक बढ़ाना है।

तीन दिवसीय सम्मेलन के दौरान दूध उत्पादन, भंडारण और पैकेजिंग में नई तकनीकों को दर्शाने वाली एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। एक्सपो में भागीदारी करने से कंपनियों को विश्व मंच पर अपने उत्पाद दर्शाने का अवसर प्राप्त हुआ।



# 49वां डेरी उद्योग सम्मेलन

प्रस्तुति: डॉ. जगदीप सक्सेना



केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन एवं डेरी मंत्री द्वारा एक्सपो का उद्घाटन (बायें)  
और आईडीए व एनडीडीबी के अध्यक्ष के साथ चर्चा (दायें)



आयोजन स्थल का विहंगम दृश्य



मुख्य अतिथि द्वारा मीडिया संवाद

आईडीए द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले प्रतिष्ठित डेरी उद्योग सम्मेलन (डीआईसी) के 49वें संस्करण का आयोजन 16-18 मार्च, 2023 को गांधीनगर गुजरात में किया गया। सम्मेलन में 19 तकनीकी सत्र आयोजित किये गये, जिनमें 3,000 से अधिक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय डेरी विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, किसानों, उत्पादकों, उद्योगों के प्रतिनिधियों आदि ने भागीदारी की। तीसरे दिन 'भारत डेरी शिखर सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 10,000 वर्गमीटर क्षेत्र में एक व्यापक और विस्तृत प्रदर्शनी (एक्सपो) का आयोजन किया गया, जिसमें 200 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय कंपनियों व संस्थाओं ने अपने उत्पादों, सेवाओं व सुविधाओं आदि का प्रदर्शन किया। डेरी क्षेत्र के प्रमुख व ज्वलंत पहलुओं पर पैनल चर्चाएं आयोजित की गईं, जिनमें 78 वक्ताओं तथा

पैनेलिस्ट्स ने श्रोताओं के साथ संवाद किया। पोस्टर सत्र में 90 प्रस्तुतियां की गईं। इस दौरान आईडीए ने अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार भी प्रदान किये।

डेरी उद्योग सम्मेलन के भव्य उद्घाटन समारोह में केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन एवं डेरी मंत्री श्री परषोत्तम रूपाला ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में डेरी विकास के लिए भारत सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों की जानकारी दी और इसे सरकार की प्राथमिकता बताया। सरकार द्वारा प्रदान की जा रही पशु एंबुलेंस सुविधा पशुपालकों की बड़ी मदद कर रही है। उन्होंने कहा कि अमृतकाल में भारत सरकार की सहायता से डेरी उद्योग को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सकता है और इसके लिए नस्ल सुधार पर मिशन मोड में कार्य करना होगा।

भारत डेरी शिखर  
सम्मेलन में केंद्रीय गृह  
एवं सहकारिता मंत्री की  
सक्रिय भागीदारी



49वें डेरी उद्योग  
सम्मेलन की झलकियां





मंत्री महोदय ने सहकारी समितियों और निजी क्षेत्र को इस कार्य में सहयोग करने का अनुरोध किया, ताकि दूध उत्पादन कई गुना बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि भारतीय डेरी सेक्टर में विश्व को दूध व डेरी सुरक्षा प्रदान करने की क्षमता है और हमें इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए। श्री रूपाला ने आशा जतायी कि सम्मेलन में प्रस्तावित चर्चाओं से भारतीय और विश्व डेरी को नई दिशा मिलेगी।

आईडीए के अध्यक्ष डॉ. आर. एस सोढ़ी ने मुख्य अतिथि का आभार और सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि आत्मनिर्भरता और कुशल आपूर्ति श्रृंखला पर जोर देने तथा बुनियादी सुविधाओं के विकास पर निवेश करने के कारण भारत ने डेरी सेक्टर में अभूतपूर्व प्रगति की है और विश्व में एक मिसाल कायम की है। उन्होंने कहा कि हमें सब्सिडी नहीं चाहिए, डेरी सेक्टर में बुनियादी सुविधाओं के विकास के लिए निवेश चाहिए। भारत का संगठित डेरी बाजार 10 लाख करोड़ रुपये का है, जो अगले 10 वर्षों में बढ़कर 30 लाख करोड़ रुपये हो जाएगा। इस अवधि में रोजगार व नौकरी के 1.25 करोड़ नये अवसर उत्पन्न होंगे। देश के डेरी सेक्टर की ओर से आईडीए का अनुरोध है कि भारत सरकार द्वारा डेरी सेक्टर के लिए आवंटित राशि यानी बजट में वृद्धि की जाए, क्योंकि यह सेक्टर कृषि जीडीपी में 30 प्रतिशत का योगदान देता है। इसे बजट का कम से कम 10 प्रतिशत मिलना चाहिए, जबकि यह मात्र 3.4 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि डेरी के विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए व्यक्तियों और संस्थाओं को आईडीए द्वारा पुरस्कृत तथा सम्मानित किया जाता है।

आईडीए (पश्चिम क्षेत्र) के अध्यक्ष और 49वीं डीआईसी के महासचिव डॉ. जे. बी. प्रजापति ने आईडीए (पश्चिम क्षेत्र) और आईडीए गुजरात राज्य चैप्टर की ओर से सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने सम्मेलन को संबोधित करते हुए बताया कि यह प्रसिद्ध सम्मेलन गुजरात में 27 वर्षों के बाद आयोजित किया जा रहा है। इससे पूर्व इसका आयोजन वर्ष 1996 में किया गया था। गुजरात डेरी सेक्टर का सबसे प्रगतिशील राज्य है और यह डेरी सहकारिता की जन्म – स्थली भी है। इस अवसर पर उन्होंने गुजरात के गांवों में डेरी के विकास और समृद्धि में योगदान करने वाले

गणमान्यों का स्मरण कर उनके प्रति आभार प्रकट किया। इनमें प्रमुख हैं— सरदार पटेल, मोरारजी देसाई, त्रिभुवन दास के. पटेल, डॉ. वर्गीज कुरियन, लालबहादुर शास्त्री व अन्य। इंटरनेशनल डेरी फेडरेशन (आईडीए) के अध्यक्ष मिस्टर पियरक्रिस्टियानो ब्राज़ेल ने अपने संबोधन में भारतीय डेरी की सराहना करते हुए कहा कि भारत में डेरी एक जीवन पद्धति है। उन्होंने आईडीए और विश्व डेरी के विकास में भारत के राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड की भी सराहना की और बताया कि इसने आईडीएफ डेरी इनोवेशन अवार्ड्स 2022 में नए उत्पाद और स्कूल दूध कार्यक्रम सहित 12 श्रेणियों में से 7 में जीत हासिल की है जो अब तक कोई देश नहीं कर सका है। उन्होंने 49वीं डी. आई. सी. में महत्वपूर्ण भागीदारी का अवसर देने के लिए आईडीए का आभार भी जताया।

नीति आयोग के सदस्य प्रोफेसर रमेश चंद ने दूध उत्पादन में भारत की प्रगति की सराहना और समीक्षा करते हुए कहा कि पोषण विशेषज्ञों के अनुसार एक स्वस्थ व्यक्ति को प्रतिदिन 380 मिली. दूध की आवश्यकता होती है। यदि दूध की खराबी-बर्बादी को ध्यान में रखा जाए तो प्रति व्यक्ति दूध उत्पादन प्रतिदिन 420 मिली. होना चाहिए। भारत ने यह लक्ष्य वर्ष 2020-2021 में ही प्राप्त कर लिया था और वर्तमान में दूध उत्पादन सिफारिश किये गये स्तर से अधिक है। देश की आबादी की आवश्यकता से अधिक दूध उत्पादन होने के कारण अब भारत को दूध और दूध उत्पादों के निर्यात पर अधिक जोर देना चाहिए।

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह ने अपने मुख्य संबोधन में भारत में भविष्य में डेरी के विकास की चर्चा की और कहा कि हमारे पास वर्ष 2047 के लिए डेरी के विकास का विज़न तैयार है। अब आवश्यकता इस बात की है कि सभी संबंधित आपस में सहयोग करके इस लक्ष्य तक पहुंचने में कामयाब हों। इसके लिए दुधारु पशुओं की उत्पादकता को चार गुना तक बढ़ाना होगा और विश्व में डेरी निर्यात में भारत की भागीदारी को 15 प्रतिशत तक ले जाना होगा। इसके साथ ही डेरी उद्योग को सतत् और पर्यावरण अनुकूल बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने भारतीय डेरी के इस महत्वपूर्ण बदलाव को साकार करने में सभी संबंधितों की भागीदारी का आह्वान किया। ■





# भारत डेरी शिखर सम्मेलन

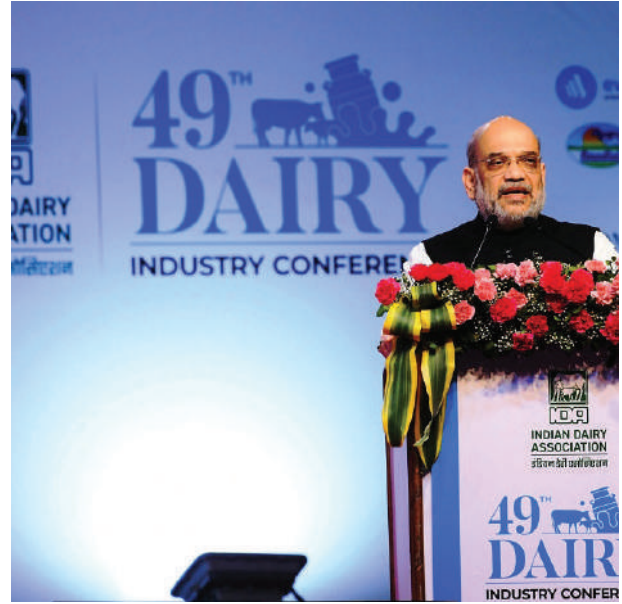
प्रस्तुति: डॉ. जगदीप सक्सेना

रिपोर्ट



केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री द्वारा दीप  
प्रज्वलित कर उद्घाटन

उ नचासवें डेरी उद्योग सम्मेलन के तत्वावधान में 18 मार्च, 2023 को गांधीनगर, गुजरात में भारत डेरी शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने किया। मंत्री महोदय ने अपने उद्घाटन भाषण में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुआ कहा कि हमें विश्व के सबसे बड़े दूध उत्पादक होने पर संतोष नहीं करना है, बल्कि सबसे बड़े निर्यातक बनने की ओर प्रयास करने हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार डेरी सेक्टर को सभी सुविधाएं एवं सहायता देने को तत्पर है। देश को श्वेतक्रांति 2.0 की आवश्यकता है, और इसके लिए सभी जरूरी कदम उठाये जा रहे हैं। डेरी सेक्टर का सहकारी मॉडल अनेक सामाजिक आर्थिक पक्षों को प्रभावित करता है, जैसे आमदनी, पोषण, डेरी पशुओं की देखभाल, रोजगार और महिला सशक्तिकरण। सहकारी मॉडल अपनाने से उपभोक्ताओं और डेरी किसानों का सीधा संपर्क हो जाता है, बिचौलिये बीच में नहीं आ पाते, जिससे उत्पादकों के लाभ में वृद्धि होती है। सहकारिता के माध्यम से गरीब ग्रामीण परिवारों और महिलाओं को दूध सीधे संग्रह केंद्र में बेचने का अवसर मिलता है। भारत में डेरी सेक्टर से नौ करोड़ परिवार (लगभग 45 करोड़ लोग) सीधे जुड़े हैं।



मंत्री महोदय का प्रेरणाप्रद संबोधन

श्री शाह ने कहा कि डेरी एक वैश्विक व्यवसाय है, परंतु 130 करोड़ से अधिक आबादी वाले हमारे देश में यह रोजगार का स्रोत, ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार, कुपोषण का समाधान और महिला सशक्तिकरण का साधन भी है। इसीलिए भारत सरकार द्वारा देश के गांवों में दो लाख डेरी सहकारिताएं गठित की जा रही हैं। इससे डेरी विकास की दर 13.80 प्रतिशत पर पहुंच जाएगी और वैश्विक दूध उत्पादन में भारत की भागीदारी बढ़कर 33 प्रतिशत हो जाएगी। उन्होंने कहा कि डेरी सेक्टर 'सहकार से समृद्धि' के मंत्र को साकार कर रहा है।

सहकारिता मंत्री ने आईडीए की सराहना करते हुए कहा कि इसकी स्थापना आजादी के तुरंत बाद 1948 में की गई थी और तब से यह निरंतर देश के डेरी विकास में योगदान कर रहा है। उन्होंने आशा जतायी कि सम्मेलन में होने वाली चर्चाओं से भारत को डेरी सेक्टर में विश्व गुरु बनाने में सहायता मिलेगी। इसके लिए उन्होंने केंद्र सरकार, राज्य सरकारों और सहकारिताओं के बीच आपसी सहयोग बढ़ाने का आह्वान भी किया।



गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्रभाई पटेल द्वारा संबोधन

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्रभाई पटेल ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि देश के छोटे किसान भारतीय डेरी सेक्टर की वास्तविक शक्ति हैं। गुजरात राज्य समग्र विकास का एक सफल मॉडल है, और डेरी उद्योग में अग्रणी है। देश के दूध उत्पादन में गुजरात का योगदान 20 प्रतिशत है।

उन्होंने कहा कि डेरी किसानों को मूल्यवर्धन पर जोर देना चाहिए और सतत वृद्धि के लिए दूध और दूध उत्पादों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

आईडीए के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. सोढ़ी ने अपने स्वागत भाषण में सभी प्रतिभागियों, अतिथियों और मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए देश के डेरी विकास में प्रमुख



आईडीए के अध्यक्ष द्वारा स्वागत व संबोधन



आईडीए के अध्यक्ष द्वारा आईडीए की सराहना

बिंदुओं को रेखांकित किया। भारतीय डेरी के विकास में हुई अभूतपूर्व वृद्धि के लिए उन्होंने तीन प्रमुख कारण बताये – दूध उत्पादन में आत्मनिर्भरता के लिए किये गये प्रयास, किसानों द्वारा संचालित कुशल आपूर्ति श्रृंखला और बुनियादी सुविधाओं के विकास के लिए किया जा रहा बड़ा निवेश। उन्होंने कहा कि भविष्य को देखते हुए हमें दूध और दूध उत्पादों की गुणवत्ता उच्चतर रखनी होगी, ताकि विदेशी बाजारों में इनकी स्वीकार्यता स्थापित हो और हम अपने डेरी



एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह का संबोधन





**भारत सरकार के पशुपालन व डेरी विभाग के सचिव डॉ. राजेश कुमार सिंह**

उत्पादन का 20 प्रतिशत भाग निर्यात कर सकें।

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह ने अपने भाषण में कहा कि अपने डेरी सहकारिता के मॉडल को पड़ोसी देशों में पहुंचाने के लिए भारत को नेतृत्व प्रदान करना चाहिए। हम श्री लंका को डेरी में आत्मनिर्भर बनाने के लिए वार्ता कर रहे हैं। इसी तरह केन्या और नेपाल के डेरी किसानों को भी सहायता करने के लिए हम बातचीत कर रहे हैं। हमारे डेरी अनुभव इनके काम आ रहे हैं। आईडीएफ के अध्यक्ष मिस्टर पियरक्रिस्टियानो ब्राज़ेल ने भारतीय डेरी सेक्टर की सराहना की और कहा कि वैश्विक डेरी नेतृत्व को डेरी सेक्टर में भारत की सफलता को बारीकी के साथ देखना-समझना चाहिए और इसी के अनुसार अपने डेरी किसानों की सहायता करनी चाहिए।

डेरी किसान हितैषी नीतियाँ बनानी चाहिए। साथ ही उन्होंने भारत के डेरी सेक्टर की चुनौतियों का सामना करने में आईडीएफ द्वारा सहयोग का आश्वासन भी दिया।

भारत सरकार के पशुपालन एवं डेरी विभाग के सचिव श्री राजेश कुमार सिंह ने पशुधन के स्वास्थ्य में सुधार और इनकी उत्पादकता में वृद्धि के लिए केंद्रीय सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों की जानकारी दी।

सहकारिता राज्य मंत्री श्री जगदीश विश्वकर्मा, आईडीएफ



**डेरी किसानों की भागीदारी**



**अमूल डेरी के एमडी श्री अमित व्यास**

की महानिदेशक सुश्री कैरोलीन एमंड और अनेक डेरी सहकारिताओं के अध्यक्ष भी इस अवसर पर उपस्थित थे। अमूल डेरी के प्रबंध निदेशक अमित व्यास ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर आईडीए ने अपने अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किये जैसे डॉ. कुरियन पुरस्कार, आईडीए पैट्रन एवं फ़ैलोशिप पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ महिला डेरी किसान पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ पोस्टर पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनी पुरस्कार आदि।



## 49वां डेरी उद्योग सम्मेलन प्रमुख सिफारिशें



### नीतियों में सुधार

**स**मावेशी विकास, रोजगार, समानता और सतृप्ता के लिए कृषि तथा डेरी सेक्टर अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भारत के सामने विश्व का सबसे बड़ा डेरी उद्योग निर्यातक बनने का लक्ष्य होना चाहिए। दूध और डेरी उत्पादों को पोषण सुरक्षा तथा कुपोषण दूर करने के आहार के रूप में प्रोत्साहन देना चाहिए। डेरी उद्योग को दूध के प्रति किये जा रहे भ्रामक प्रचार का कड़ा विरोध करना चाहिए। यह प्रचार वीगन और वनस्पति पेय बनाने वाले व्यावसायिक समूहों द्वारा किया जा रहा है। दूध एकमात्र प्राकृतिक आहार है, जो उचित पोषण और अनेक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। दूध की गुणवत्ता और खाद्य सुरक्षा में सुधार के लिए संगठित क्षेत्र द्वारा दूध के व्यवसाय की मात्रा को बढ़ाने की आवश्यकता है। प्राकृतिक आपदा, दुर्घटनाओं, रोग प्रकोप आदि की दशा में पशुओं की मृत्यु होने पर किसानों को मुआवजा देने के लिए एक उपयुक्त प्रक्रिया तैयार करनी चाहिए। दूध और इसके उत्पादों पर जीएसटी की दर घटाकर पांच प्रतिशत करनी चाहिए और पशु आहार बनाने वाली सामग्रियों जैसे शीरा पर जीएसटी खत्म कर देना चाहिए।

पशुओं की अवस्था, स्वास्थ्य और अन्य गतिविधियों पर निरंतर निगरानी रखना आज की आवश्यकता है, और इसलिए 'आधार' की तरह की एक पशु पहचान प्रणाली लागू करनी चाहिए। पशु कल्याण के उपायों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। क्षमतावान स्थानीय नस्लों की उत्पादकता में सुधार के प्रयास करने चाहिए और परंपरागत डेरी उत्पादों के निर्माण को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। पूरे देश में दूध की कीमत एक

समान तय करने की नीति हो और आहार व चारा की गुणवत्ता में सुधार होना चाहिए। हरे चारे की उपलब्धता बढ़ाने के प्रयास किये जाएं। गैर गोवंशीय पशुओं के दूध को उनकी कार्यात्मक खूबियों के लिए अपनाया जा सकता है। भारत में डेरी सेक्टर के निरंतर विकास के लिए डेरी में महिलाओं के सशक्तिकरण को मजबूत करना होगा और निर्यात को भी प्रोत्साहन देना होगा। डेरी सेक्टर में स्टार्टअप को भी बढ़ावा देना चाहिए। डेरी सेक्टर में सतृप्ता और जलवायु अनुकूलता के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

### दूध उत्पादन और प्रसंस्करण

कच्चे दूध की गुणवत्ता बढ़ाने और दूध व दूध उत्पादों के निर्माण तथा बिक्री में अंतरराष्ट्रीय मानकों को अपनाने की आवश्यकता है। मूल्यसंवर्धन की दिशा में कार्य करते हुए अधिक टिकाऊ (शैल्फ लाइफ) दूध का उत्पादन, दूध में इम्यूनिटी बढ़ाने वाले तत्वों का समावेश, अधिक प्रोटीन वाले उत्पादों का निर्माण, प्रोबायोटिक्स का उत्पादन और जैविक उत्पादन जैसी नई तकनीकों और डिजिटलीकरण के उपयोग को बढ़ाना होगा, ताकि डेरी संबंधी प्रणालियों में कुशलता और आंकड़ों व जानकारीयों में पारदर्शिता बढ़ सके। प्रसंस्करण की नई तकनीकों और विधियों को भी अपनाना चाहिए। दूध की गुणवत्ता की तुरंत और सटीक जांच करने वाली मशीनों के व्यावहारिक उपयोग को बढ़ाना चाहिए।

### पशु प्रजनन, पोषण और स्वास्थ्य

बोवाइन ब्रीडिंग एक्ट को लागू करना चाहिए, ताकि अवैज्ञानिक प्रजनन पर अंकुश लग सके। नस्ल सुधार के लिए कृत्रिम गर्भाधान (एआई) और भ्रूण स्थानान्तरण

प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रोत्साहन और केवल मादा पशुओं के जन्म को सुनिश्चित करने के लिए लिंग चयनित वीर्य के उपयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। दूध की उत्पादन लागत को कम करने के लिए डेरी किसानों को साइलेज तथा कुल मिश्रित राशन के उपयोग पर सब्सिडी देनी चाहिए। आहार और हरा चारा उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सैटेलाइट डेटा का उपयोग करते हुए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अपनानी होगी। रोगों के उपचार और पशु स्वास्थ्य के लिए परंपरागत और होम्योपैथी जैसी वैकल्पिक पद्धतियों को अपनाना चाहिए। चारे की कमी को दूर करने के लिए चारा उत्पादन करने वाले कृषक उत्पादक संगठनों के गठन पर जोर देना चाहिए।

### डेरी शिक्षा, अनुसंधान और विकास

प्रतिभाशाली छात्रों को आकर्षित करने के लिए डेरी शिक्षा में सुधार अपेक्षित है। अनुसंधान और विकास के परिणामों को डेरी उद्योग द्वारा अपनाने योग्य होना चाहिए, ये प्रयोगशाला में सीमित होकर ना रह जाएँ। इसके लिए डेरी उद्योगों और अनुसंधान संस्थानों के बीच बेहतर समन्वय की जरूरत है। दूध और दूध उत्पादों के बेहतर भविष्य और विकास के लिए एक उच्चकोटि का अनुसंधान और विकास व नवाचार केंद्र स्थापित करना चाहिए। छात्रों के लिए विद्या डेरी जैसे मॉडल को अन्य राज्यों में भी विस्तारित करना चाहिए।

### सततता और पर्यावरण संरक्षण

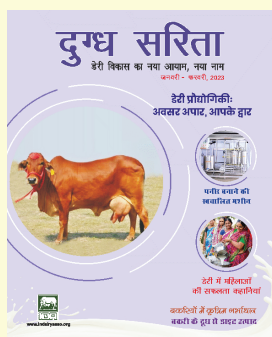
गोपशुओं के गोबर से बायोगैस और जैविक उर्वरक बनाकर डेरी को सतत् बनाना चाहिए। ऊर्जा कुशल और ऊर्जा की बचत करने वाली प्रौद्योगिकी को अपनाकर व्यर्थ की मात्रा को कम या खत्म किया जा सकता है। डेरी उद्योग में सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ाने की आवश्यकता है। डेरी में जल संग्रह और जल संरक्षण के प्रयास करने चाहिए। डेरी की सततता तभी सफल होगी जब दूध की आकर्षक कीमत मिलेगी।

### खाद्य मानक

दूध और दूध उत्पादों की सुरक्षा व गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय मंचों से प्राप्त अनुभवों को लागू करने की आवश्यकता है। खाद्य सुरक्षा के राष्ट्रीय मानकों का अंतरराष्ट्रीय मानकों के साथ तालमेल करना चाहिए ताकि उपभोक्ता का स्वास्थ्य सुरक्षित रहे और दूध व दूध उत्पादों के निर्यात में सुविधा हो। 'डेरी' शब्द के उचित उपयोग से संबंधित नियमन को लागू करना चाहिए। खाद्य सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। ■

(रिपोर्ट: आदित्य जैन और जे.बी. प्रजापति)

## डेरी सेक्टर में विज्ञापन के उत्तम साधन आईडीए के लोकप्रिय प्रकाशन



द्विमासिक पत्रिका

संपर्क: ida.adv@gmail.com



मासिक पत्रिका



THE ONE THING THAT  
MAKES ALL OUR PRODUCTS  
DELIGHTFULLY DELICIOUS  
IS THE GOODNESS OF  
OUR MILK.



sweet rich  
creamy  
happiness.



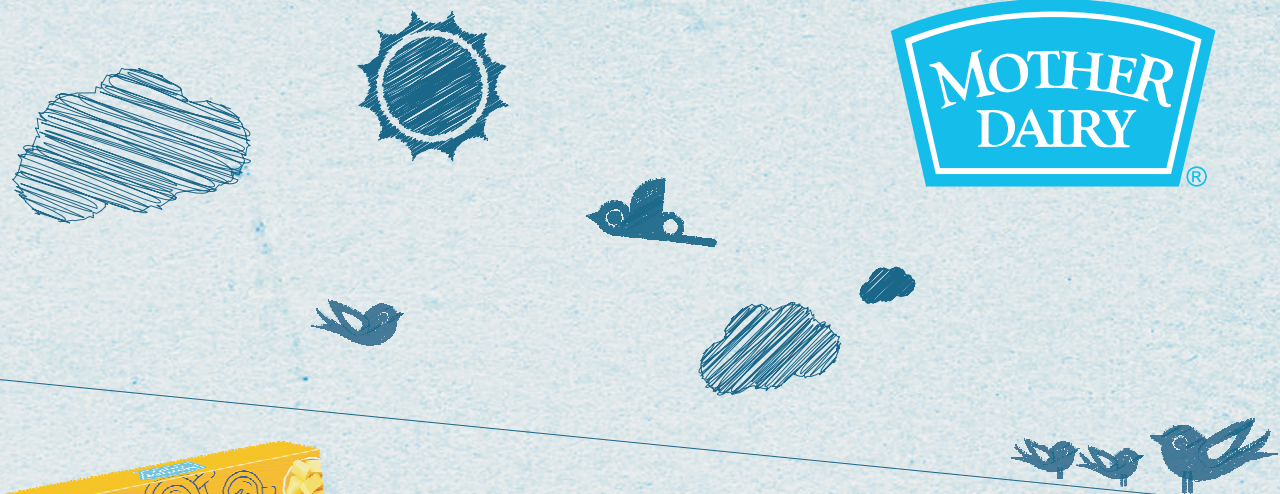
happiness  
of juicy  
mangoes  
with mishti  
doi



soft creamy  
delicious  
happiness.







cheesy  
wholesome  
tasty  
happy.



rich  
creamy.  
happiness.



happy mix of  
real fruits  
with delicious  
curd.



the happiest  
mix of healthy  
and tasty.



thick rich  
fruity  
happiness.



\*Visual Depiction Only



# पशुपालन

पशुपालकों हेतु  
(सौजन्य: राजस्थान पशुचिकित्सा एवं

## मार्च 2023

- ग्रीष्मकाल में हरे चारे हेतु मक्का, बाजरा एवं ज्वार की बुआई करें।
- बहुवर्षीय घासों जैसे हाइब्रिड नेपियर, गिनी घास की खेतों में रोपाई करें।
- आने वाले समय में पशुओं में बाँझपन एवं फुराव आदि रोग भी होते हैं, अतः ऐसे में पशुओं की तुरन्त चिकित्सा करवाएं।
- ब्याँने वाले पशुओं को खनिज मिश्रण 50–60 ग्राम प्रति पशु प्रतिदिन दें।
- बदलते मौसम में पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा का ध्यान रखें।
- यदि दूध उत्पादन में कमी हो रही हो तो पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर दूध व पेशाब की जांच करायें।
- इस माह से गर्मी में होने वाले रोगों के प्रति सावधानी रखनी होगी।
- यदि मच्छर, मक्खी, चींचड़ आदि जीवों की संख्या में वृद्धि हो रही हो तो इनसे फैलने वाले रोगों का बचाव करें।
- बरसीम, रिजका एवं जई की सिंचाई क्रमशः 10 दिन एवं 12–14 दिन के अन्तराल पर करें।
- हरे चारे से साइलेज तैयार करें।



# कैलेंडर 2023

निर्देश

पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान)

## अप्रैल 2023

- कुछ मादा पशुओं में गर्मी (ताव में आना) के लक्षण रात्रि में अधिक प्रदर्शित होते हैं, अतः पशुपालक अपने पशुओं का ध्यान रखें।
- भार ढोने वाले पशुओं को दोपहर से शाम चार बजे तक छाया एवं हवादार स्थान में आराम करायें।
- पशुओं में जल व लवण की कमी, भूख कम होना एवं कम उत्पादन अधिक तापमान के प्रमुख प्रभाव हैं, अतः पशुओं को अत्यधिक धूप से बचाने के उपाय करें।
- चारागाहों में घास अपने न्यूनतम स्तर पर होती है तथा पशुपोषण भी वर्षा न होने तक अपेक्षाकृत कमजोर रहता है। ऐसे में लवण, विशेषकर फॉस्फोरस, की कमी के कारण पशुओं में 'पाइका' नामक रोग के लक्षण नजर आने लगते हैं, अतः बाँटे व चाटे में लवण मिश्रण अवश्य मिलायें।
- पीने के पानी के इंतजाम पर भी ध्यान दें। पानी की कुण्डी साफ रखें। पशुओं को कम से कम दिन में चार बार पानी पिलाएँ।
- इस माह में अधिक तापमान होने की सम्भावना रहती है।
- गर्भित (छः माह से अधिक) पशुओं को अतिरिक्त राशन दें।





## सफलता की कहानी

## झारखंड की सुश्री निकिता बनी राष्ट्रीय डेरी पुरस्कार विजेता

मेहनत, लगन और सूझबूझ के साथ यदि सही समय पर सही मार्ग निर्देशन मिल जाए तो सफलता कदम चूमती है। झारखण्ड की बेटा सुश्री निकिता कुमारी के साथ यही हुआ।



सुश्री निकिता कुमारी को सम्मान-केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन एवं डेरी मंत्री श्री परषोत्तम रूपाला द्वारा गणमान्यों की उपस्थिति में पुरस्कार

**झ**ारखण्ड के देवघर जिला में मधुपुर प्रखण्ड के कडबिंधा गाँव की रहने वाली सुश्री निकिता कुमारी ने एक सफल एवं कुशल दुग्ध उत्पादक किसान के रूप में खुद को साबित कर दिखाया है। आज सुश्री निकिता दूध उत्पादन के क्षेत्र में न केवल अपने प्रखण्ड बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब रही हैं और इसमें इनके पति श्री ब्रज किशोर यादव जी का भी बहुत बड़ा योगदान एवं सहयोग रहा है।

पूर्वी भारत में डेरी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने एवं योगदान के लिए इनको 16 मार्च, 2023 को गांधीनगर गुजरात में आयोजित इंडियन डेरी एसोसिएशन की 49वीं डेरी इंडस्ट्री कॉन्फ्रेंस में पूर्वी क्षेत्र से देश की 'सर्वश्रेष्ठ महिला किसान' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें माननीय केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन एवं डेरी मंत्री भारत सरकार श्री परषोत्तम रूपाला जी के द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर इंडियन डेरी एसोसिएशन के



**प्रेरणाप्रद संबोधन**

अध्यक्ष डॉ. आर. एस. सोढी, राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह एवं झारखण्ड दुग्ध महासंघ के एमडी तथा इंडियन डेरी एसोसिएशन के पूर्वी प्रक्षेत्र के अध्यक्ष श्री सुधीर कुमार सिंह उपस्थित थे। सुदूर गाँव से संबंध रखनेवाली झारखण्ड की बेटी को डेरी क्षेत्र में राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त होना न सिर्फ क्षेत्र की दूसरी महिलाओं के लिए प्रेरक है, बल्कि इससे राज्य के सभी दूध उत्पादक एवं किसान अपार खुशी एवं गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। सुश्री निकिता कुमारी झारखण्ड की अन्य महिलाओं खासकर किसानों एवं दूध उत्पादकों के लिए प्रेरणास्रोत बन कर उभरी हैं।

सुश्री निकिता कुमारी मधुपुर के टीटेहयाबाँक गाँव में एक कृषक परिवार में जन्मी एवं पली-बढ़ी हैं। इन्होंने भौतिकी (फिजिक्स) विषय से स्नातक तक की पढ़ाई की

है। वर्ष 2016 में इनकी शादी कडबिंधा गाँव के श्री ब्रज किशोर यादव से हुई। श्री ब्रज किशोर जी ने भी स्नातक तक की पढ़ाई की है एवं शादी के समय तक किसी अन्य व्यवसाय में लगे हुए थे। शादी के बाद दोनों ने साथ मिलकर कुछ अलग करने की ठानी। अपने घर के अगल-बगल दूध की किल्लत को देखते हुये इनका ध्यान गौपालन की ओर गया। चूँकि घर में पहले से ही देशी गाय थी, तो गौपालन करने में किसी प्रकार की कोई पारिवारिक अथवा सामाजिक मुश्किलें नहीं आयीं। प्रारम्भ में घर से ही पूंजी लगाकर पांच गाय से इन्होंने दूध उत्पादन का कार्य प्रारम्भ किया, जिसकी खपत अपने गाँव में ही हो जाती थी। दुग्ध व्यवसाय में लाभ को देखते हुये इन्होंने सरकारी सहायता के लिए प्रयत्न किया। गव्य विकास से इन्हें कामधेनु योजना के तहत सहायता प्राप्त हुई। दूध उत्पादन बढ़ जाने के कारण इसके विपणन में दिक्कत आने लगी। कई बार इन्हें दूध मधुपुर बाजार में औने-पौने दाम में बेचना पड़ता था और कई बार दूध बिकता भी नहीं था, जिससे आर्थिक क्षति उठानी पड़ती थी। बाद में इनके पति ने झारखण्ड राज्य दुग्ध महासंघ के देवघर इकाई कार्यालय में संपर्क कर अपने गाँव में ही दुग्ध संग्रह केंद्र की स्थापना करवायी। वर्ष



**डेरी कार्य में मेहनत व लगन**





**राष्ट्रीय पहचान व सम्मान**

2018 में मेधा डेरी का दुग्ध संग्रह केंद्र खुल गया। प्रारम्भ में ये स्थानीय बिक्री के बाद शेष बचे दूध को ही केंद्र में बेचती थीं, लेकिन अब सुबह-शाम दोनों पालियों में दूध बेचने से दूध का उचित मूल्य पर भुगतान निर्धारित समय से बैंक खाता में प्राप्त हो जाता है एवं समय की भी बचत होती है। तो अब ये घर की खपत के बाद पूरा दूध संग्रह केंद्र में ही बेचने लगीं। वर्तमान में इनके पास 26 दुधारू गाय हैं, जिसमें से अभी 18 गाय दूध दे रहीं हैं। इसके अतिरिक्त इनके पास तीन भैंसें एवं 14 बछिया भी हैं। अभी इनके यहाँ लगभग 160 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन होता है। ये अपना दूध प्रतिदिन मेधा डेयरी के कडबिंधा दुग्ध संग्रह केंद्र, मधुपुर में बेचकर प्रतिमाह लगभग 1.5 लाख रुपया इस व्यवसाय से कमा लेती हैं तथा अपने परिवार को आर्थिक रूप से सबल बनाने में भरपूर सहयोग कर रहीं हैं। आने वाले समय में इनका लक्ष्य खुद का 500 लीटर दूध उत्पादन कर गाँव में ही दुग्ध शीतलक केंद्र की स्थापना करवाने का है।

इस व्यवसाय को बढ़ाने के लिए दूध की कमाई से ही हाल में इन्होंने बगल के चेतनारी पंचायत के बरतिया गाँव में पाँच एकड़ जमीन लीज़ पर लेकर हरा चारा के उत्पादन का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। सुश्री निकिता कुमारी कहती हैं कि इनका ध्यान पशुपालन को आधुनिक व वैज्ञानिक तरीके से करने पर है। उत्तम गुणवत्ता का

पशु आहार एवं क्षेत्र विशेष मिनरल मिक्सचर तो मेधा डेरी से प्राप्त हो जा रहा है, परंतु सूखा चारा महंगा होने के कारण दुग्ध उत्पादन लागत अधिक हो रही है, जिससे लाभ कम हो पाता है। इसलिए हरे चारे की उपलब्धता का प्रयास किया जा रहा है। उम्मीद है कि आने वाले समय में इस समस्या का भी समाधान निकल आयेगा। इसके अतिरिक्त यूरिया उपचारित भूसा एवं साइलेज निर्माण की भी व्यवस्था की जा रही है। साथ ही मेधा डेरी की ओर से किये जा रहे मेन्योर मैनेजमेंट के तहत गोबर से गोबर गैस एवं कम्पोस्ट (खाद) बनाने वाली पद्धति को भी जल्द ही अपने फार्म पर स्थापित करने की योजना बना रही हैं। साथ ही सुश्री निकिता कुमारी ने राज्य सरकार के द्वारा किसानों को दी जाने वाली अनुदान राशि को भी 01 रु. प्रति लीटर से बढ़ाकर 03 रु. प्रति लीटर करने के लिए माननीय मंत्री कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता, झारखंड सरकार श्री बादल पत्रलेख जी तथा माननीय मुख्यमंत्री झारखंड सरकार श्री हेमंत सोरेन जी को धन्यवाद दिया। साथ ही यह कहा कि इस प्रोत्साहन राशि से किसानों का मनोबल बढ़ेगा तथा पशुपालन के प्रति रुझान भी बढ़ेगा।

सुश्री निकिता को एक बिटिया है, जिसकी उम्र 6 वर्ष एवं एक बेटा है, जिसकी उम्र 4 वर्ष है। दूध से होने वाली आय से ही ये अपने दोनों बच्चों को मधुपुर में ही अच्छे स्कूल में पढ़ा रहीं हैं। अपने दोनों ही बच्चों को अच्छी शिक्षा देना चाहती हैं। गाँव में स्वास्थ्य सुविधा की कमी को देखते हुये सुश्री निकिता बताती हैं कि अपनी बेटी को डॉक्टर बनाना चाहती हूँ, जिससे गरीबों को भी अच्छे डॉक्टर के देख-रेख में इलाज मिल सके, वहीं अपने बेटे को प्रशासनिक सेवा में भेजना चाहती हैं। ये अपने सास-ससुर की देख-रेख भी अच्छे से कर रहीं हैं। निकिता का पूरा परिवार आज खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहा है। पुराने दिनों को याद कर वो बोलती हैं कि गाय सेवा हमारे लिए वरदान साबित हुई है और वह गौ सेवा हमेशा करती रहेंगी। सुश्री निकिता कुमारी अपनी सफलता का श्रेय मेधा डेरी के प्रबंधन और अपने पति व परिवार को देती हैं।



## स्वास्थ्य की सुरक्षा उपभोक्ताओं का हक : अरोड़ा



श्रीमती सुषमा अरोड़ा का संबोधन, राजस्थान डेरी में महत्वपूर्ण आयोजन

**रा**जस्थान को-ऑपरेटिव डेरी फेडरेशन की प्रशासक और प्रबंध संचालक श्रीमती सुषमा अरोड़ा ने कहा कि स्वास्थ्य की सुरक्षा उपभोक्ताओं का हक है और यह उन्हें मिलना ही चाहिए। श्रीमती अरोड़ा 6 मई, 2023 को जवाहर लाल नेहरू मार्ग स्थित होटल क्लार्क में आयोजित सेमिनार में राज्यभर से आये डेरी विशेषज्ञों को संबोधित कर रही थीं। सेमिनार का आयोजन इण्डियन डेरी एसोसिएशन के राजस्थान चैप्टर ने फेडरेशन ऑफ इंडस्ट्रियल हैल्थ एण्ड सेफ्टी (एफआईएचएस) के सहयोग से किया गया था। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उन्होंने कहा कि उपभोक्ताओं को उच्च गुणवत्तायुक्त एवं स्वास्थ्यवर्धक दूध उत्पाद उपलब्ध कराये जाने चाहिये, ताकि उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा से कोई समझौता न हो।

“हैल्थ एण्ड सेफ्टी थ्रेट्स, चैलेंजेस एण्ड एकजीक्यूशन” विषय पर आयोजित कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए फेडरेशन ऑफ इंडस्ट्रियल हैल्थ एण्ड सेफ्टी के राष्ट्रीय सलाहकार श्री एन. के. जैन ने डेरी उद्योग में स्वास्थ्य सुरक्षा पर विस्तार से चर्चा की। एफआईएचएस के अध्यक्ष श्री एन. के. सिंह, इण्डियन डेरी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष श्री ए. के. खोसला और नॉर्थ जोन के अध्यक्ष श्री एस. एस. मान ने भी अपने विचार रखे। कार्यशाला में राज्य भर से सहकारी और निजी डेरियों और पशु आहार संयंत्रों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों ने भाग लिया। आईडीए राजस्थान चैप्टर के अध्यक्ष श्री राहुल सक्सेना ने स्वागत उद्बोधन दिया और सचिव श्री करुण चण्डालिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

## नवाचार

## पशु सखियां: झारखंड का सामुदायिक पशु स्वास्थ्य सेवा मॉडल

- पशु सखियां किसानों को सलाह देती हैं कि पशुओं की देखभाल कैसे करें, और उन्हें किसान समूहों और बाजारों से जोड़कर पशुओं में पालने के फायदे बताती हैं।
- विश्व बैंक समर्थित जोहार परियोजना लगभग 57,000 लाभार्थी किसानों की मदद कर रही हैं, जिनमें से 90 प्रतिशत महिलाएं हैं।
- जोहार के तहत पशु सखी मॉडल को हाल ही में संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन और अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान द्वारा किसान सेवा वितरण के लिए शीर्ष आठ वैश्विक सर्वोत्तम अभ्यास मॉडल में से एक के रूप में चुना गया है।



पशु सखी का स्नेह

यह सितंबर की सुबह है और भारत के मध्य-पूर्वी राज्य झारखंड के गुमला जिले के टेंगरिया गांव में पूरे एक हफ्ते की बदली के बाद धूप हुई है। बत्तीस वर्षीय सोमती ने अभी अपने घर की सफाई का काम पूरा किया है, बच्चों को स्कूल भेजा है और सास-ससुर और पति को खाना बनाकर खिलाया है। वह जल्दी से अपना यूनिफॉर्म पहनती हैं। एक गाढ़े नीले रंग की साड़ी, उसी रंग का एप्रॉन और

एक टोपी पहनकर वह जल्दी से बाहर जाती हैं। उन्होंने अपने साथ अपना स्मार्टफोन और एक बॉक्स रखा है, जिसे लेकर वह गांव के पूर्वी इलाके में जाती हैं, जहां वह अगले चार-पांच घंटे बिताने वाली हैं।

सोमती एक प्रशिक्षित पशु सखी है, जिसका सीधा सादा मतलब है "जानवरों की मित्र।" वह कम से कम 10 ऐसे घरों का दौरा करती हैं, जो पशुपालक हैं। उनमें



### पशुओं से मैत्री और देखभाल

से ज्यादातर बकरियां होती हैं। वह उन परिवारों को उनके पालतू जानवरों के नियमित स्वास्थ्य परीक्षण जैसे टीकाकरण, डी-वार्मिंग (कृमिहरण) और प्राथमिक उपचार में मदद करती हैं। वह उन्हें पालतू जानवरों की स्वच्छता, प्रजनन और उनके पोषण को लेकर सलाह देती हैं। इसके अलावा उन्हें खेतों को साफ रखना और पशुओं के अपशिष्ट के उचित इस्तेमाल के तौर-तरीकों के बारे में भी जानकारी देती हैं।

वह खुशी से कहती हैं, “मुझे खुशी होती है जब ग्रामीण मुझे ‘बकरी डॉक्टर’ (बकरियों का डॉक्टर) कहते हैं। मैं और भी कड़ी मेहनत करना चाहती हूँ और आने वाले वर्षों में अपनी आय को दोगुना करना चाहती हूँ।”

सोमती आगे कहती हैं, “मैं और मेरे पति के पास चार बकरियां थीं। हमें उनकी देखभाल, खानपान और प्रजनन को लेकर कोई जानकारी नहीं थी। बकरियां हमारी आमदनी का बहुत छोटा जरिया थीं और हम अपना घर चलाने के लिए बहुत कड़ी मेहनत कर रहे थे। अब, प्रशिक्षण लेने के बाद, न सिर्फ मैं अपने जानवरों की उचित देखभाल कर पाती हूँ, बल्कि दूसरों की जरूरत में उनकी मदद भी कर सकती हूँ।”

सोमती ने आठवीं कक्षा तक पढ़ाई की है, और 2018 में वह एक पशु सखी बनीं। इसके लिए उन्होंने विश्व बैंक द्वारा समर्थित सरकारी “जोहार (द झारखंड ऑपॅर्च्युनिटीज

फॉर हार्नेसिंग रूरल ग्रोथ) परियोजना” के तहत आयोजित किए गए 30 दिन के प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लिया था।

इस पार्ट-टाइम (अंशकालिक) काम के जरिए सोमती पहले के प्रति माह 3000– 5000 रुपए की तुलना में अब हर महीने में लगभग 10,000–20,000 रुपए कमा रही हैं। वह इस बात पर गर्व महसूस करती हैं कि अपने पति के अलावा अब वह भी अपने घर के खर्चों में सहयोग कर सकती हैं। उनके दो बच्चे अब निजी स्कूल में पढ़ते हैं। वह बताती हैं, “मुझे बहुत खुशी होती है जब गांव वाले मुझे “बकरियों की डॉक्टर” कहते हैं। मैं और कड़ी मेहनत करना चाहती हूँ, ताकि आने वाले कुछ सालों में अपनी आमदनी को दोगुनी कर सकूँ।”

### झारखंड में पशु-उत्पादकता की निम्न दर

झारखंड में पशुधन से जुड़ा ज्यादातर उत्पादन कार्य भूमिहीन और हाशिए पर आने वाले किसान करते हैं, जिनमें महिलाओं का योगदान 70 प्रतिशत से अधिक है। पिछले एक दशक में, देश भर में मांस और अंडों की कीमतों में 70–100 प्रतिशत का उछाल आया है। लेकिन झारखंड जैसे निम्न आय वाले राज्य में पशुपालन में लगे हुए किसान इस मौके का फायदा उठाने में असमर्थ थे। उनके पास जानवरों की देखभाल से जुड़ी जानकारीयां अपर्याप्त थीं, और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल और प्रजनन से



जुड़ी सहायता सुविधाओं तक पहुंच बेहद सीमित थी। राज्य में पशु चिकित्सकों और पशुधन का अनुपात देश में सबसे कम था और उसके साथ ही साथ सीमित संसाधनों और सुविधाओं से जुड़ी समस्याएं भी थीं।

इसका नतीजा ये हुआ कि पशुओं की मृत्यु दर बहुत ज्यादा थी। बकरियों के लिए ये दर 30 प्रतिशत से अधिक, और सुअरों और मुर्गियों के लिए लगभग 80 प्रतिशत थी। इसके कारण अंडे और मांस का उत्पादन भी बहुत कम था। परिणामस्वरूप, किसानों की आमदनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, जहां उनकी आय 800 रुपए प्रति माह जितने निम्न स्तर पर थी।

जोहार परियोजना के तहत, समुदाय के पशु स्वास्थ्य-सेवा कर्मियों को मुर्गी, बत्तख, बकरी और सुअर जैसे जानवरों की देखभाल के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण के बाद, पशु सखी न केवल जानवरों की देखभाल को लेकर सलाह देने का काम करती हैं, बल्कि वे किसानों को व्यावसायिक पशुपालन से जुड़े आर्थिक लाभों के बारे में भी समझाती हैं। वे उनकी उत्पादकों और व्यापारियों से संपर्क जोड़ने में भी सहायता करती हैं, ताकि उनकी बाजार तक पहुंच आसान हो सके और वे आसानी से अपने उत्पादों की बिक्री कर सकें।



पशुओं की मित्र, पशु सखी

### किसानों की पशुपालन में मदद

कृषक समुदाय की महिलाएं आमतौर पर अपने घरों के पिछवाड़े में पशुओं की देखभाल और उनके प्रजनन से जुड़े काम करती हैं। इसलिए, स्थानीय महिलाओं को “पशु सखी” के रूप में प्रशिक्षित करने से जुड़ी योजना पशु-उत्पादन, व्यापार और किसानों की आमदनी बढ़ाने की दिशा में सबसे ज्यादा उपयुक्त लगी।

परियोजना के तहत अब तक 1000 से अधिक पशु सखियों को प्रशिक्षित किया जा चुका है और उनमें से 70 फीसदी प्रशिक्षित महिलाओं को एग्रीकल्चर स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया (एएससीआई) द्वारा प्रमाणित किया गया है, जिससे ये सुनिश्चित होता है कि वे उच्च किस्म की सेवा सुविधाएं प्रदान करने में सक्षम हैं।

पशु सखियां समय-समय पर किसानों के लिए



### चर्चा और प्रशिक्षण

प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी करती हैं। चितामी गांव की मंजू पिछले दो सालों से मुर्गी पालन कर रही हैं। अपने गांव की एक पशु सखी से तीन दिनों तक प्रशिक्षण लेने के बाद, मंजू अब अपने मुर्गी पालन केंद्र को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर पा रही हैं। वह कहती हैं, “मुर्गियों के लिए सही आहार क्या है, या बीमारी फैलने पर क्या करना चाहिए, इसके बारे में हमें पहले कोई जानकारी नहीं थी। अब मैं छोटे-छोटे काम खुद ही कर सकती हूँ, और जरूरत पड़ने पर किसी आकस्मिक सहायता के लिए फोन करके पशु सखी को बुला सकती हूँ।”

पशु सखियां पेशेवर तरीके से अपनी सेवाएं और सलाह देकर एक उद्यमी के तौर पर भी अपनी आमदनी बढ़ा रही हैं। रांची जिले के खांबिता गांव में रहने वाली 30 वर्षीय हसीबा खातून किसानों को मुर्गियां बेचती हैं। मुर्गी प्रजनन की मदद से उनके पास 3000-4000 मुर्गियों का स्टॉक है, जिसके बदले उन्होंने लगभग एक लाख रुपये का मुनाफा कमाया है। उन्होंने पशुधन प्रबंधन में 45 दिनों का एक अतिरिक्त प्रशिक्षण भी लिया है, और स्वयं एक वरिष्ठ प्रशिक्षक हैं। एक प्रमुख प्रशिक्षक के तौर पर उन्हें अक्सर राज्य के अन्य जिलों के दौरे पर जाना पड़ता है। वह कहती हैं, “मैं खुशकिस्मत हूँ कि इस दौरान मेरे पति

ने, पहले पशु सखी और बाद में एक मास्टर ट्रेनर के रूप में, मेरा साथ दिया है। मेरे प्रशिक्षण ने मुझे अपनी आय को तेजी से बढ़ाने में मदद की है।”

झारखंड में जोहार परियोजना में एएससीआई द्वारा प्रमाणित ऐसे 29 मास्टर ट्रेनर मौजूद हैं।

विश्व बैंक द्वारा समर्थित जोहार परियोजना से लगभग 57,000 किसानों को लाभ मिला है, जिनमें से 90 प्रतिशत महिलाएं हैं।

यूके के ऑक्सफोर्ड समूह ने कार्यक्रम की निगरानी और मूल्यांकन से जुड़े अपने स्वतंत्र अध्ययन में पाया है कि किसान अपने घरों के छोटे से पिछवाड़े में पशु-उत्पादन के काम से प्रति माह 45,000 रुपये से ज्यादा कमा रहे हैं। यह जोहार परियोजना के शुरू होने से पहले की उनकी औसत कमाई से 55 से 125 गुना ज्यादा है।

हाल ही में संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन और अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान ने जोहार परियोजना के तहत पशु सखी मॉडल को कृषक सेवा प्रदाता से जुड़े आठ सबसे बेहतरीन वैश्विक अभ्यासों में से एक घोषित किया है।

(विश्व बैंक से साभार)

## ‘दुग्ध सरिता’ के सदस्य बनें घर बैठे पत्रिका पाएं



**इंडियन डेरी एसोसिएशन  
का प्रकाशन**

**दुग्ध सरिता**

(द्विमासिक पत्रिका)

**अंकों की संख्या : 6**

**वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 450/-**

**कीमत रु. 75/- प्रति अंक**

साधारण डाक से निःशुल्क डिलीवरी, कोरियर या  
रजिस्टर्ड डाक का शुल्क रु. 40/- प्रति अंक

**दुग्ध सरिता** : देश में डेरी सेक्टर का विकास आईडीए का मिशन है और इसके लिए हिंदी भाषा में डेरी किसानों को लक्ष्य करते हुए इस द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है। यह पत्रिका डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों की एक बड़ी मांग और जरूरत पूरी करती है। ‘दुग्ध सरिता’ डेरी किसानों की समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित है और संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करती है।

‘दुग्ध सरिता’ की 4,000 या अधिक प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसे सहकारी समितियों और निजी डेरी सेक्टर के संस्थागत सदस्यों सहित आईडीए के सभी सदस्यों, शैक्षणिक संस्थानों और सभी संबंधित सरकारी विभागों को प्रेषित किया जा रहा है। इसके माध्यम से नई तकनीकों, सर्वोत्तम दूध प्रक्रियाओं, डेरी प्रसंस्करण और आधिक दूध उत्पादन सहित सभी पहलुओं पर जानकारी प्रदान की जा रही है। ‘दुग्ध सरिता’ में लेख, समाचार व विचार, केस स्टडीज, सफलता गाथाएं, फोटो फीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी। इसका उद्देश्य डेरी पशुओं के पालन से लेकर दूध उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण तथा बिक्री के सभी आयामों को शामिल करते हुए डेरी किसानों और डेरी व्यवसाय को प्रगति तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है।

आईडीए द्वारा ‘इंडियन डेरीमैन’ और ‘इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस’ नामक दो अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है, जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं।

### सदस्यता फार्म

हाँ, मैं सदस्य बनना चाहता हूँ :

**दुग्ध सरिता**

विवरण...../एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष/प्रतियों की संख्या

(कृपया ‘टिक’ करें)

पत्रिका भेजने का पता (अंग्रेजी में लिखें तो कैपिटल लैटर प्रयोग करें)

संस्थान / व्यक्ति का नाम.....

संपर्क व्यक्ति का नाम व पदनाम (संस्थान सदस्यता के लिए).....

पता.....

शहर.....

राज्य.....पिन कोड.....ई-मेल.....

फोन.....मोबाइल.....

संलग्न बैंक ड्राफ्ट/स्थानीय चेक (एट पार) नं.....

बैंक.....इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली को देय

एनईएफटी विवरण (ट्रांसैक्शन आईडी.....तारीख.....राशि.....)

(हस्ताक्षर)

कृपया इस फॉर्म को भरकर डाक से भेजें या ई-मेल करें।

सेक्रेटरी (ऐस्टेबलिशमेंट), इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सेक्टर-IV आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022

फोन : 26179781, 26170781 ईमेल : [dsarita.ida@gmail.com](mailto:dsarita.ida@gmail.com) वेबसाइट : [www.indairyasso.org](http://www.indairyasso.org)

एनईएफटी विवरण : खाता नाम : इंडियन डेरी एसोसिएशन बचत खाता संख्या : 90562170000024 आईएफएससी : CNRB0019009

बैंक : केनरा बैंक ; शाखा: दिल्ली तमिल संगम बिल्डिंग, सेक्टर V आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022



## डेरी पशुओं पर गर्मी का दुष्प्रभाव एवं उसका प्रबंधन

धर्मपाल, जितेंदर राणा, जसवंत कुमार रेगर, ज्योतिमाला साहू एवं अरुण कुमार मिश्रा  
कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केंद्र, भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

जलवायु परिवर्तन पशुओं की विभिन्न पशुधन उत्पादन प्रणालियों की स्थिरता एवं अस्तित्व के लिए एक खतरे के रूप में उभर कर सामने आया है। भारत जैसे उष्णकटिबंधीय देश में जलवायु परिवर्तन विशेष महत्व रखता है, क्योंकि हमारे देश में कृषि एवं पशुपालन काफी हद तक जलवायु पर निर्भर करते हैं। हाल में, यह देखा गया कि पृथ्वी के तापमान में प्रति दशक 0.2 डिग्री तक की वृद्धि हुई और यह भी भविष्यवाणी की गई है कि वर्ष 2100 तक औसत सतह का तापमान 1.4 से 5.8 डिग्री तक बढ़ जाएगा। इस कारण गर्मी से तनाव एक गंभीर समस्या के रूप में उभर कर सामने आया है। गर्मी तनाव का डेरी पशुओं के उत्पादन, प्रजनन एवं स्वास्थ्य पर अत्यन्त बुरा असर पड़ता है। प्रस्तुत आलेख में गर्मी से तनाव का डेरी पशुओं के उत्पादन, प्रजनन एवं स्वास्थ्य पर अत्यन्त बुरा प्रभाव एवं उनके प्रबंधन से संबंधित जानकारियों को संकलित करने का प्रयास किया गया है।

### प्रस्तावना

गर्मी से तनाव को उस बिन्दु के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जहाँ पशु अपने शारीरिक तापमान के संतुलन को बनाये रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में अपने शरीर से गर्मी को छोड़ नहीं पाता है। गर्मी से तनाव को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक तापमान, आर्द्रता, विकिरण और हवा हैं। गर्मी तनाव की गहनता को तापमान आर्द्रता सूचकांक का उपयोग कर ज्ञात किया जा सकता है। जब तापमान आर्द्रता सूचकांक की इकाई 72 या उससे अधिक होती है तब वह गर्मी से तनाव की स्थिति उत्पन्न करती है। यह इकाई जैसे-जैसे बढ़ने लगती है। पशु में गर्मी तनाव के दुष्प्रभाव बढ़ने लगते हैं।

गर्मी से तनाव विश्व के गर्म नम वातावरण वाले देशों

में सबसे ज्यादा दर्ज किया गया है, जो पशु की उत्पादकता एवं स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है।

**पशु के दुग्ध उत्पादन एवं संरचना पर प्रभाव:** गर्मी से तनाव पशु के दुग्ध उत्पादन एवं संरचना पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। उपाध्याय आदि (2009) ने सूचित किया है कि गर्मी से तनाव की वजह से भारत का कुल वार्षिक दुग्ध उत्पादन 2 प्रतिशत घट गया, जिससे देश को प्रति वर्ष लगभग 2661.62 करोड़ रुपये की हानि हुई।



पशुओं को छायादार जगहों पर रखें

तापमान आर्द्रता सूचकांक 72 से कम होने पर कोई तनाव नहीं, पशु के उत्पादन एवं प्रजनन पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है।

72-79 के बीच होने पर हल्का तनाव, हल्के तनाव की स्थिति को समायोजित करने के लिए पशु छाया में जाता है तथा श्वसन दर में वृद्धि और रक्त वाहिकाओं में फैलाव करता है। दुग्ध उत्पादन पर कम असर पड़ता है।

80-89 के बीच होने पर मध्यम तनाव, पशु के लार उत्पादन और श्वसन की दर दोनों में वृद्धि होती है। आहार अन्तर्ग्रहण में कमी आ जाती है।



**छाया में तनाव कम करते पशु**

90–98 के बीच होने पर गंभीर तनाव, शरीर का तापमान बहुत ज्यादा बढ़ जाता है। यह पशु के लिए बेहद असहज स्थिति होती है।

98 से अधिक होने पर खतरनाक तनाव, इस स्थिति में गायों की मौत हो जाती है।

गर्मी से तनाव के दौरान दुग्ध उत्पादन घटने का प्रमुख कारण पशु का घटा हुआ आहार अर्न्तग्रहण एवं नकारात्मक ऊर्जा संतुलन होता है। यदि तापमान आर्द्रता सूचकांक 68 से 78 तक बढ़ जाये तो पशु का आहार अर्न्तग्रहण 9.6 प्रतिशत एवं दुग्ध उत्पादन 21 प्रतिशत तक घट जाता है। बारोई आदि (2002) ने दर्ज किया कि गर्म नम वातावरण के दौरान उत्पन्न गर्मी से तनाव दूध की गुणवत्ता को भी प्रभावित करता है। बारोई इत्यादि (2002) ने अपने अध्ययन में गर्मी तनाव से ग्रस्त पशुओं के दूध में प्रोटीन एवं वसा को घटा हुआ दर्ज किया।

### **पशुओं की प्रजनन क्षमता पर प्रभाव**

गर्मी के तनाव से मादा पशुओं की प्रजनन क्षमता पर निम्नलिखित प्रमुख नकारात्मक प्रभाव आते हैं।

### **मद के लक्षण की अभिव्यक्ति**

गर्मी से तनाव की स्थिति में गाय-भैंसों के मद के लक्षणों की तीव्रता बेहद कम हो जाती है। विभिन्न अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि मई से सितंबर माह के बीच 75–80 प्रतिशत पशुओं के मद की पहचान नहीं हो पाती या असमय होता है। अतः पशुपालकों को आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। गर्मी से तनाव की स्थिति में मद का

समय एवं लक्षणों की तीव्रता दोनों ही घट जाती है, जो संभवतः ग्राफियन में एस्ट्रोजन हार्मोन के कम हो जाने की वजह से होता है। गर्मी से तनाव के दौरान पशुओं की शरीरिक क्रिया कम हो जाती है, जो उनके मद के लक्षणों की कम अभिव्यक्ति का एक कारण होता है। गर्म-नम मौसम में पशु की सक्रियता कम होने की वजह से दूसरे पशुओं पर चढ़ाई की संख्या ठंड के मौसम के मुकाबले लगभग आधी हो जाती है।

### **अंडाशय के पुटक का विकास**

गर्मी से उत्पन्न तनाव से पीड़ित पशुओं की सबसे बड़ी समस्या उसके अंडाशय के पुटकों का कम विकास होना है। गर्मी से उत्पन्न तनाव के दौरान पशु का शुष्क पदार्थ अर्न्तग्रहण घट जाता है, जिसकी वजह से प्रजनन संबंधी हार्मोन फोलिकल उत्तेजक हार्मोन एवं लूटीनाइजिंग हार्मोन का स्तर घट जाता है। इसके परिणामस्वरूप अंडाशय के पुटकों का काफी धीमा विकास होता है और सामान्य से छोटे पुटकों का डिम्बक्षरण होता है। जिन अंडाणुओं का क्षरण होता है, उनकी गुणवत्ता भी खराब हो जाती है (स्टोरी, 2002)। छोटे पुटकों को बेहद कम इस्ट्राडायोल निकलता है। परिणामस्वरूप, गर्मी से तनाव के कारण पशु की कामेच्छा घट जाती है। गर्मी से तनाव से गर्भकाल की आखिरी तिमाही के दौरान भ्रूण का विकास घट जाता है तथा गर्भवती मादा पशु के शरीर में महत्वपूर्ण हार्मोन (एस्ट्रोजन) का स्तर घट जाता है। गर्भावस्था की आखिरी तिमाही के दौरान उत्पन्न गर्मी तनाव के दुष्प्रभाव का असर पशु के प्रसवोत्तर प्रजनन प्रदर्शन एवं दुग्ध उत्पादन में भी देखा गया है (कोलियर इत्यादि, 1982)।

### **पशु शरीर के हार्मोन पर प्रभाव**

गर्मी से तनाव की स्थिति में रक्त में कोर्टिसोल हार्मोन की सांद्रता बढ़ जाती है। कोर्टिसोल हार्मोन का बढ़ा होना तनाव का एक स्पष्ट सूचक है (मिटो एवं साथी, 1992)। गर्मी से तनाव के दौरान दुधारू पशुओं के रक्त में चयापचय संबंधी हार्मोन जैसे ट्राईआयोथायरोनिन एवं थायोक्सिन का स्तर घट जाता है, तथा जो मादा पशु गर्मी तनाव का अत्यधिक दबाव झेलती है, उनके शरीर में इस्ट्राडायोल हार्मोन का स्तर घट जाता है। इस महत्वपूर्ण



हार्मोन की कमी से मद के लक्षणों की अभिव्यक्ति, उनकी तीव्रता, अंडाशय से अंडाशय से अंडाणु निकलने की प्रक्रिया आदि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। गर्मी से तनाव का अन्य प्रजनन संबंधी हार्मोन जैसे गोनाडोट्रोफिन, इन्हिबिन, प्रोस्टाग्लैंडीन इत्यादि पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। इसकी वजह से मादा पशुओं की गर्मी में आने की क्षमता प्रभावित होती है (वाल्फेसन, इत्यादि 1993)। गर्मी से तनाव से ग्रस्त पशुओं के रक्त में प्रोजेस्टेरोन हार्मोन का स्तर भी घट जाता है, जो भ्रूण के विकास पर दुष्प्रभाव डालता है।

### पशुओं की आहार अन्तर्ग्रहणता एवं रूमेन की कार्यक्षमता पर प्रभाव

वातावरण पर बढ़ा हुआ तापमान पशु शरीर में स्थित हाइपोथेलामस के क्षुधा केंद्र पर दुष्प्रभाव डालता है, जिससे पशु की आहार अन्तर्ग्रहणता कम हो जाती है। इसकी वजह से पशु नकारात्मक ऊर्जा संतुलन में चला जाता है। इससे उसका शारीरिक वजन एवं शारीरिक स्थिति कमजोर हो जाती है। गर्मी से तनाव के दौरान रूमेन में एसिटेट का उत्पादन घट जाता है तथा प्रोपियोनेट और ब्यूटाइरेट का उत्पादन बढ़ जाता है। इसकी वजह से पशु कम चारा खाने लगता है तथा रूमेन में जीवाणु की संख्या कम हो जाती है तथा रूमेन का पी-एच मान 5.82 से 6.03 हो जाता है, जिससे रूमेन की गतिशीलता एवं पशु की जुगाली प्रभावित होती है।

### पशु के स्वास्थ्य पर प्रभाव

विभिन्न अनुसंधानों से यह ज्ञात हुआ है कि गर्म-नम वातावरण में गर्मी से तनाव के दौरान पशु रोग फैलने की दर बढ़ जाती है। गर्मी से तनाव के दौरान डेरी पशुओं में थनैला (जिगर आदि 2014), लंगड़ापन (सेंडर आदि 2009) एवं सब – क्लिनिकल कंटोसिस (लाइ सेटेरा आदि 1996) अन्तः परजीवी एवं बाह्य परजीवी जनित रोगों के होने की संभावना बढ़ जाती है।

### रोगप्रतिरोधक शक्ति

गर्मी से तनाव के दौरान पशु की रोगप्रतिरोधक शक्ति कम हो जाती है। गर्मी से तनाव के दौरान पशु के शरीर में प्रतिरक्षा कोशिकाओं इम्यूनोग्लोबुलिन का स्तर कम हो

जाता है (ब्लेचा एवं साथी, 1984)।

इसके अतिरिक्त गर्मी से तनाव में पशु की शारीरिक एवं व्यावहारिक संबंधी प्रतिक्रियाओं में बदलाव आता है।

गर्मी से तनाव के दौरान श्वसन दर, पल्स दर, त्वचा एवं मलाशय का तापमान बढ़ जाता है। गर्मी से तनाव से बछड़ों के जन्म के समय शारीरिक वजन घट जाता है। वातावरण का बढ़ा हुआ तापमान पशु की कोशिकाओं की संरचना एवं कार्यप्रणाली पर प्रतिकूल असर डालता है, जिससे उनका चयापचय प्रभावित होता है। ऐसी स्थिति में कोशिकाएं अधिकतम मात्रा में प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन पैदा करने लगती हैं। इससे लिपिड, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन तथा डी एन ए नष्ट होने लगते हैं। प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन के पैदा होने से पशु शरीर में ऑक्सीडेटिव तनाव हो जाता है।

### ग्रीष्म तनाव के दुष्प्रभाव को कम करने की रणनीतियाँ

**उच्च गुणवत्ता के राशन का प्रयोग:** पशुपालक अगर कुछ कार्यनीतियों का पालन करें तो गर्मी से होने वाले तनाव के दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है और उस समय होने वाली आर्थिक हानि से भी बचा जा सकता है। ब्याने के बाद प्रायः दुधारू पशु नकारात्मक ऊर्जा संतुलन में चला जाता है। अगर उस समय वह गर्मी से तनाव से ग्रस्त है तो वह और भी ज्यादा प्रभावित होता है क्योंकि इस समय उनकी आहार अन्तर्ग्रहणता घट जाती है। यदि पशुपालक पशुओं को उच्च गुणवत्ता वाला चारा एवं संतुलित आहार खिलायें तो गर्मी से तनाव के दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है। पशु आहार में पोटेशियम की मात्रा बढ़ा देने से बेहतर परिणाम देखने को मिले हैं।

**बाईपास वसा का प्रयोग:** गर्मी से तनाव के दौरान डेरी पशुओं में रूमेन एसिडोसिस होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए रेशा की गुणवत्ता को बढ़ाना चाहिए ताकि पशु के लार का उत्पादन एवं रूमेन की बफरिंग अधिक से अधिक हो सके। जब पशु कम चारा खा रहा हो उस समय एक उच्च गुणवत्ता वाले बाईपास वसा को खिलाने से पशु को ऊर्जा सघन आहार की प्राप्ति होती है। पशु आहार में वसा का उपयोग गर्मी के भार को कम करता है तथा



**आवश्यक हैं गर्मी से बचाव के उपाय और पर्याप्त पोषण**

दुग्ध उत्पादन में भी वृद्धि करता है।

### **पशु आहार में ऐंटीऑक्सीडेंट का अनुपूरण:**

पशुपालक पशु आहार में ऐंटीऑक्सीडेंट जैसे विटामिन ई, विटामिन सी, जिंक एवं सेलेनियम का प्रयोग करें तो गर्मी तनाव की वजह से होने वाले ऑक्सीडेटिव तनाव को काफी हद तक घटाया जा सकता है। कुमार एवं साथी (2010) ने भैंसों में विटामिन – सी के अनुपूरण से गर्मी तनाव के सूचकों में महत्वपूर्ण रूप में कमी दर्ज की है। पटेल एवं साथी (2017) ने अपने अध्ययन में पाया कि गर्मी से तनाव के दौरान संकर गो पशुओं के आहार में 120 पीपीएम जिंक होने से गर्मी का प्रभाव कम होता है। ताप नियंत्रण शेड के नीचे खड़े पशु तक कम ताप पहुँचता है। यदि पशु को शेड टिन का है तो शेड को पराली से भली प्रकार से ढक देना चाहिए ताकि नीचे खड़े पशु तक गर्मी कम से कम जा पाए। छत के नीचे ऊष्मारोधक की तह भी लगाई जा सकती है। छत की ऊँचाई 11.5 से 14.5 फीट तक होनी चाहिए।

यदि तालाब की व्यवस्था नहीं हो तो गर्मियों में पशु को तीन से चार बार पानी से नहलाना चाहिए। पशुशाला में गर्म हवाओं से बचने के लिए स्थानीय उपलब्ध सामान जैसे की जूट या बोरी के पर्दों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

गर्म मौसम के वातावरण को संशोधित करने का सबसे अच्छा तरीका पशु को एक छायादार स्थान उपलब्ध कराना है। किमोथी एवं घोष (2005) ने ये दर्ज किया कि छायादार स्थान गर्मी संचय को कम करता है। लेकिन इसका हवा के तापमान

या सापेक्षित आर्द्रता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है तथा गर्म जलवायु में पशुओं के लिए अतिरिक्त शीतलन आवश्यक है।

### **मद की जाँच के तरीकों में सुधार**

गर्मी तनाव से मद के लक्षणों की अभिव्यक्ति एवं तीव्रता घट जाती है। ऐसे पशु के प्रजनन प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए मद जाँच के तरीकों में सुधार एक आवश्यक कदम है। मद जाँच की नवीनतम तकनीकें जैसे पैडोमीटर, टीजर नर का प्रयोग तथा पशु के व्यवहार संबंधी लक्षणों का गहनता से अवलोकन कर पशु के प्रजनन प्रदर्शन को सुधारा जा सकता है।

### **आनुवंशिक संशोधन**

पशुओं की शीतलन क्षमता में आनुवंशिक विभिन्नता पायी जाती है। यह संकेत देती है कि गर्मी से तनाव को सहने वाली पशु को आनुवंशिक रूप से चुना जा सकता है तथा संकर नस्ल के मुकाबले देसी नस्ल में शीतलन क्षमता ज्यादा होती है।

### **निष्कर्ष**

गर्मी से तनाव विभिन्न तंत्रों के माध्यम से डेरी पशुओं की उत्पादन एवं प्रजनन क्षमता को प्रभावित करता है। गर्मी से तनाव के दुष्प्रभाव मुख्यतः शरीर के तापमान में वृद्धि के कारण होते हैं जो पशु के स्वास्थ्य, रोग-प्रतिरोधक क्षमता, दुग्ध उत्पादन एवं प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं। डेरी पशु पर गर्मी तनाव के दुष्प्रभावों को कम करने के लिए राशन में बाईपास वसा, ऐंटीऑक्सीडेंट का प्रयोग एवं पशु के वातावरण में संशोधन एवं प्रजनन प्रबंधन किये जाने चाहिए। ■

(दुग्ध गंगा से साभार)





## कदम्ब के फूल

कहानी

— सुभद्रा कुमारी चौहान

**"भौ**जी ! लो मैं लाया।"  
"सच ले आए ! कहाँ मिले?"

"अरे ! बड़ी मुश्किल से ला पाया, भौजी!"

"तो मजदूरी ले लेना।"

"क्या दोगी?"

"तुम जो मांगो।"

"पर मेरी मांगी हुई चीज मुझे दे भी सकोगी?"

"क्यों न दे सकूंगी? तुम मेरी वस्तु मेरे लिए ला सकते हो तो क्या मैं तुम्हारी इच्छित वस्तु तुम्हें नहीं दे सकती?"

"नहीं भौजी न दे सकोगी, फिर क्यों नाहक कहती हो?"

"अब तुम्हीं न लेना चाहो, तो बात दूसरी है, पर मैंने तो कह दिया कि तुम जो मांगोगे, मैं वही दूंगी।"

"अच्छा अभी जाने दो, समय आने पर मांग लूंगा।" कहते हुए मोहन ने अपने घर की राह ली। दूर से आती हुई भामा की सास ने मोहन को कुछ देने में लिए हुए घर के भीतर जाते हुए देखा था। किन्तु वह ज्यों ही नजदीक पहुँची, मोहन दूसरे रास्ते से अपने घर की तरफ जा चुका था। वे मोहन से कुछ पूछ न सकीं, पर उन्होंने यह अपनी आँखों से देखा था कि मोहन कुछ देने में लाया है, किन्तु क्या लाया है यह न जान सकीं।

(2)

घर आते ही उन्होंने बहू से पूछा, "मोहन दोने में क्या लाया था?" भामा मन ही मन मुस्कराई बोली—मिठाई।

बुढ़िया क्रोध से तिलमिला उठी, बोली—"इतना खाती है, दिन भर बकरी की तरह मुँह चला ही करता है, फिर भी पेट नहीं भरता। बाजार से भी मिठाई मंगा—मंगा के खाती है। अभी मैं न देखती तो क्या तू कभी बतलाती ?

भामा—( मुस्कराते हुए) "तो बतलाती क्यों ? कुछ बतलाने के लिए थोड़े ही मंगवाई थी?"

"क्यों क्या मैं घर में कोई चीज ही नहीं हूँ ? तेरे लिए तो मिठाई के लिए पैसे हैं। मैं चार पैसे दान— दक्षिणा के लिए मांगूँ तो सदा मुँह से नहीं निकलती है। तेरा आदमी है, तो मेरा भी तो बेटा है। क्या उसकी कमाई में मेरा कोई हक ही नहीं। मुझे तो दो चार सूखी रोटी छोड़ कर कुछ भी न नसीब हो और तू मिठाई मंगा—मंगा के खाए। कर ले जितना तेरा जी चाहे। भगवान तो ऊपर से देख रहा है। वह तो सजा देगा ही।"

भामा (मुस्कराते हुए) "क्यों कोस रही हो माँजी ! मिठाई एक दिन खा ही ली तो क्या हो गया ? अभी रखी है, तुम भी ले लेना।"

"चल, रहने दे। अब इन मीठे पुचकारों से किसी और को बहकाना, मैं तेरे हाल सब जानती हूँ। तू समझती होगी कि तू जो कुछ करती है, वह कोई नहीं जानता। मैं तो तेरी नस—नस पहिचानती हूँ। दुनियां में बहुत सी औरतें देखी हैं, पर सब तेरे तले तले।"

भामा (मुस्कराते हुए) "सब मेरे तले—तले न रहेंगी तो करेंगी क्या? मेरी बराबरी कर लेना मामूली बात नहीं है। मैं ऐसी—वैसी थोड़े हूँ।"

“चल चल बहुत बड़प्पन न बघार, नहीं तो सब बड़प्पन निकाल दूंगी।”

भामा अब कुछ चिढ़ गई थी, बोली— “बड़प्पन कैसे निकालोगी मां जी, क्या मारोगी?”

मां जी को और भी क्रोध आ गया और बोलीं—“मारुंगी भी तो मुझे कौन रोक लेगा? मैं गंगा को मार सकती हूँ, तो क्या तुझे मारने में कोई मेरा हाथ पकड़ लेगा?”

“मारो, देखूँ कैसे मारती हो ? मुझे वह बहू न समझ लेना जो सास की मार चुपचाप सह लेती हैं ।”

“तो क्या तू भी मुझे मारेगी? बाप रे बाप ! इसने तो घड़ी भर में मेरा पानी उतार दिया। मुझे मारने कहती है। आने दे गंगा को मैं कहती हूँ कि भाई तेरी स्त्री की मार सह कर अब मैं घर में न रह सकूंगी, मुझे अलग झोपड़ा डाल दे, मैं वहीं पड़ी रहूंगी। जिस घर में बहू सास को मारने के लिए खड़ी हो जाए, वहाँ रहने का धरम नहीं।” यह कहते- कहते मां जी जोर-जोर से रोने लगीं ।”

भामा ने देखा कि बात बहुत बढ़ गई, अतः वह बोली—“मैंने तुम्हें मारने को तो नहीं कहा मां जी ! क्यों झूठमूठ कहती हो। हाँ, मैं मार तो चुपचाप किसी की न सहूंगी। अपने मां-बाप की नहीं सही, तो किसी और की क्या सहूंगी।”

“चुपचाप न सहेगी, तो मुझे भी मारेगी न? वही बात तो हुई। यह मखमल में लपेट-लपेट कर कहती है तो क्या मेरी समझ में नहीं आता।”

मांजी के जोर-जोर से रोने के कारण आसपास की कई स्त्रियाँ इकट्ठी हो गईं। कई भामा की तरफ सहानुभूति रखने वाली थीं, कई मांजी की तरफ, पर इस समय मांजी को फूटफूट कर रोते देखकर सब ने भामा को ही भला-बुरा कहा। सब मांजी को घेरकर बैठ गईं। भामा अपराधिनी की तरह घर के भीतर चली गई। भामा ने सुना सास जी आसपास बैठी हुई स्त्रियों से कह रही थीं—अपना तो दोना भर-भर मिठाई मंगा-मंगा कर खाती है और मैंने कभी अपने लिए पैस-धेले की चीज के लिए भी कहा, तो फौरन ही

टका-सा जवाब दे देती है, कहती है पैसा ही नहीं है। इसके नाम से पैसे आ जाते हैं, मेरे नाम से कंगाली छा जाती है। किसी भी चीज के लिए तरस-तरस के मांग-मांग के जीभ घिस जाती है, तब जी में आया तो ला दिया नहीं तो कुत्ते की तरह भूँका करो। यह मेरा इस घर में हाल है। आज भी दोना भर मिठाई मंगवाई है। मैंने जरा ही पूछा, तो मारने के लिए खड़ी हो गई। कहती है मेरे आदमी की कमाई है, खाती हूँ, किसी के बाप की खाती हूँ क्या ? उसका आदमी है तो मेरा भी तो बेटा है, उसका 12 आने हक है तो मेरा 4 आने तो होगा ही।”

पड़ोस की एक दूसरी बुढ़िया बोली—“राम राम! यही पढ़ी-लिखी होशियार हैं। पढ़ी-लिखी हैं तो क्या हुआ अकल तो कौड़ी के बराबर नहीं है। तुमने भी नौ महीने पेट में रखा बहिन! तुम्हारा तो सोलह आने हक है। बहू को, बेटा मां के लिए लौंडी बनाकर लाता है, वह तुम्हारे पैर दबाने और तुम्हारी सेवा करने के लिए है। हमारा नन्दन तो जब तक बहू मेरे पैर नहीं दबा लेती, उसे अपनी कोठरी के अन्दर ही नहीं आने देता।”

“अपना ही माल खोटा हो तो परखने वाले का क्या-दोष, बहिन ! बेटा ही सपूत होता तो बहू आज मुझे, मारने दौड़ती।”

(3)

गंगाप्रसाद गाँव की प्रायमरी पाठशाला के दूसरे मास्टर की जगह के लिए उम्मीदवार थे। साढ़े सत्रह रुपए माहवार की जगह के लिए बिचारे दिनभर दौड़-धूप करते, इससे मिल, उससे मिल, न जाने किसकी-किसकी खुशामद करनी पड़ती थी, फिर भी नौकरी पाने की उन्हें बहुत कम उम्मीद थी। इधर वे कई मास से बेकार बैठे थे। भामा के पास कुछ जेवर थे जो हर माह गिरवी रखे जाते थे और किसी प्रकार काट-कसर करके घर का खर्च चलता था। भामा पैसों को दांत तले दबाकर खर्च करती। सास और पति को खिलाकर स्वयं आधे पेट ही खाकर पानी से ही पेट भरकर उठ जाती। कभी दाल का पानी ही पी लिया करती। कभी शाक



उचलकर ही पेट भर लिया करती। रुपये पैसों की तंगी के कारण घर में प्रायः रोज ही इस प्रकार कलह मची रहती है। जब गंगाप्रसाद जी दिन भर की दौड़-धूप के बाद थके-हारे घर लौटे तब शाम हो रही थी, आंगन में उनकी मां उदास बैठी थीं, बेटे को देखा तो नीची आँख कर ली, कुछ बोली नहीं। गंगाप्रसाद अपनी मां का बड़ा आदर करते थे। उनका बड़ा ख्याल रखते थे। जिस बात से उन्हें जरा भी कष्ट होता वह बात वे कभी न करते थे। मां को उदास देखकर वे मां के पास जाकर बैठ गये, प्यार से मां के गले में बाहें डाल दीं, पूछा-क्यों मां आज उदास क्यों है ? क्या कुछ तबियत खराब है ?

“नहीं, अच्छी है।”

“कुछ भी तो हुआ है, माँ तू उदास है।”

अब मां जी से न रहा गया, फूट-फूट के रोने लगीं, बोलीं-“कुछ नहीं मैं आदमी-औरत में लड़ाई नहीं लगवाना चाहती, बस इतना ही कहती हूँ कि अब मैं इस घर में न रह सकूंगी, मेरे लिए अलग झोपड़ा बनवा दे वहीं पड़ी रहूंगी। जी में आवे तो खरच भी देना नहीं तो मांग के खा लूंगी।”

“क्यों मां ! क्या कुछ झगड़ा हुआ है ? सच-सच कहना !”

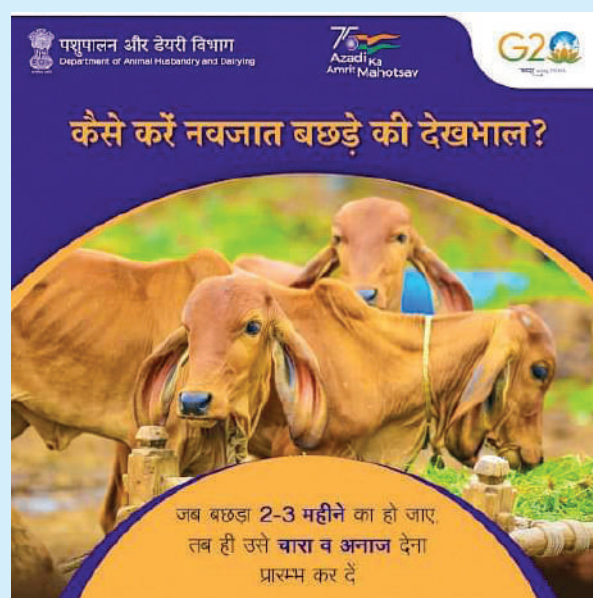
“आज ही क्या है? यह तो तीसों दिन की बात है ! तेरी घर

वाली ने मोहन से मिठाई मंगवाई, वह दोना भर मिठाई मेरे सामने लाया, मैं जरा पूछने गई तो कहती है, हाँ मंगवाती हूँ खाती हूँ! अपने आदमी की कमाई खाती हूँ, कुछ तुम्हारे बाप का तो नहीं खाती? जब मैंने कहा कि तेरा आदमी है तो मेरा भी तो बेटा है, उसकी कमाई में मेरा भी हक है तो कहती है कि तुम्हारा हक जब था तब था, अब तो सब मेरा है। ज्यादा बोलोगी तो मार के घर से निकाल दूंगी। तो बाबा तेरी औरत है तू ही उसकी मार सह, मैं मांग के पेट भले ही भर लूँ। पर बहू के हाथ की मार न खाऊँगी।”

गंगाप्रसाद अब न सह सके, बोले- “बहू तुझे मारेगी माँ! मैं ही न उसके हाथ-पैर तोड़ कर डाल दूंगा। कहते हुए वे हाथ की लकड़ी उठाकर बड़े गुस्से से भीतर गये। मामा को डाँटकर पूछा-“क्या मंगाया था तुमने मोहन से?”

गंगाप्रसाद के इस प्रश्न के उत्तर में “कदम्ब के फूल थे, भैया!” कहते हुए मोहन ने घर में प्रवेश किया, तब तक भामा ने दोना उठाकर गंगाप्रसाद के सामने रख दिया था। दोने में आठ, दस पीले-पीले गोल-गोल बेसन के लड्डुओं की तरह कदम्ब के फूलों को देखकर गंगाप्रसाद को हंसी आ गई।

मोहन ने दोने में से एक फूल उठाकर कहा-“कितना सुन्दर है यह फूल, भौजी” !



## दुग्ध सरिता में विज्ञापन दें, लाभ बढ़ाएं

### RATE CARD ————— DUGDH SARITA

Position	Rate per insertion	Inaugural Offer
	Rs.	Rs.
<b>Back Cover</b> (Four Colours)*	18,000	12,000
<b>Inside Front Cover</b> (Four Colours)	14,400	10,000
<b>Inside Back Cover</b> (Four Colours)	14,400	10,000
<b>Inside Right Page</b> (Four Colours)	10,800	7,000
<b>Inside Left Page</b> (Four Colours)	9,600	6,000
<b>Facing Spread</b> (Four Colours)	16,800	11,000
<b>Half Page</b> (Four Colours)	5400	4000

\* Fifth colour: extra charges will be levied. **Note: GST 5% will be applicable on the above tariff.**

### TECHNICAL DETAILS

**Magazine Size** in cm — **Height** : 26.5 cm; **Width**: 20.5 cm  
Please leave 1 cm space from all side i.e. top-bottom-left and right. For bleed size artwork, please provide 1 cm bleed from all side over and above given size of the magazine.

### Terms and Conditions

- Indian Dairy Association reserves the exclusive right to reject any advertisement, whether or not the same has already been acknowledged and/or previously published.
- The advertisement material should reach the IDA House on or before the informed deadline date.
- Cancellation of advertisements is not accepted after the booking deadline has expired.
- The Association will not be liable for any error in the advertisement.
- The Association reserves the right to destroy all material after a period of 45 days from the date of issue of the last advertisement.

### Artwork

The ad material may be sent through email on the ID: [ida.adv@gmail.com](mailto:ida.adv@gmail.com) in PDF & JPG OR CDR & JPG format only. All four colour scan should be saved as CMYK not RGB. Processing charges would be borne by the advertiser as per actuals.

### Mode of Payment

100% Advance. Payment should be made through Bank Draft payable at New Delhi / Cheque payable at par / NEFT in favour of the "Indian Dairy Association" along with the Release Order. Bank details are as follows: **Name:** Indian Dairy Association; **SB a/c No:** 90562170000024; **IFSC:** CNRB0019009; **Bank:** Canara Bank; **Branch Address:** Delhi Tamil Sangam Building, Sector – V, R.K. Puram New Delhi.

#### Contact for Ads

Mr. Narendra Kumar Pandey  
Sr. Executive-Publications. Ph. (Direct): 011-26179783 M.: 9891147083

### Indian Dairy Association

IDA House, Sector-IV, R.K. Puram, New Delhi-110 022  
Ph.: 91-11-26165355, 26170781, 26165237  
E-mail: [ida.adv@gmail.com](mailto:ida.adv@gmail.com) Web: [www.indairyasso.org](http://www.indairyasso.org)

# अत्यधिक गर्मी बनता है पशुओं में तनाव का कारण



आयुर्वेट की औषधि है इसका निवारण



## रैस्टोबल

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए



500 मि.ली.

1 लीटर





# अमूल दूध पीता है इंडिया



## अमूल दूध



## एशिया का सबसे बड़ा मिल्क ब्रांड

खुला दूध सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है. अमूल आपके लिए लाते हैं पाश्चराइज़्ड पाउच दूध.  
यह शुद्ध और विटामिन्स से भरपूर होता है. इसे अत्याधुनिक मशीनों की मदद से पैक किया जाता है,  
इसलिए यह ईसानी हाथों से अनछुआ रहता है. अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें 011-28524336/37.

Follow us: /amul.coop | /amul\_coop | /amultv | /amul\_india | Visit us at <http://www.amul.com>

11430665HIN

प्रकाशक व मुद्रक ज्ञान प्रकाश वर्मा द्वारा, इंडियन डेयरी एसोसिएशन के लिए रॉयल आफसेट,  
ए-89/1, फेज-1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित व इंडियन डेयरी एसोसिएशन,  
आईडीए हाऊस, सेक्टर-4, आर. के. पुरम, नई दिल्ली - 110022 से प्रकाशित, सम्पादक - जगदीप सक्सेना